24-2-84

## ब्राह्मण जन्म – अवतरित जन्म

अव्यक्त वतन वासी बापदादा अपने अवतरित बच्चों प्रति बोले:-

''बापदादा आवाज में आते सभी को आवाज से परे की स्थिति में ले जाने के लिए, व्यक्त देश में व्यक्त शरीर में प्रवेश होते हैं अव्यक्त बनाने के लिए। सदा अपने को अव्यक्त स्थिति वाले सूक्ष्म फरिश्ता समझ व्यक्त देह में अवतरित होते हो? सभी अवतरित हाने वाले अवतार हो। इसी स्मृति में सदा हर कर्म करते, कर्म के बन्धनों से मुक्त कर्मातीत अवतार हो। अवतार अर्थात् ऊपर से श्रेष्ठ कर्म के लिए नीचे आते हैं। आप सभी भी ऊंची ऊपर की स्थिति से नीचे अर्थात देह का आधार ले सेवा के प्रति कर्म करने के लिए पुरानी देह में, पुरानी दुनिया में आते हो। लेकिन स्थिति ऊपर की रहती है, इसलिए अवतार हो। अवतार सदा परमात्म पैगाम ले आते हैं। आप सभी संगमयुगी श्रेष्ठ आत्मायें भी परमात्म पैगाम देने के लिए, परमात्म मिलन कराने के लिए अवतरित हुए हो। यह देह अब आपकी देह नहीं रही। देह भी बाप को दे दी। सब तेरा कहा अर्थात् मेरा कुछ नहीं। इस देह को सेवा के अर्थ बाप ने लोन में दी है। लोने में मिली हुई वस्तु पर मेरे-पन का अधिकार हो नहीं सकता। जब मेरी देह नहीं तो देह का भान कैसे आ सकता। आत्मा भी बाप की बन गई। देह भी बाप की हो गई तो मैं और मेरा अल्क का कहां से आया! मैं-पन सिर्फ एक बेहद का रहा। मैं बाप का हूँ। जैसा बाप वैसा मैं मास्टर हूँ। तो यह बेहद का मैं-पन रहा। हद का मैं-पन विघ्नों में लाता है। बेहद का मैं-पन निर्विघ्न, विघ्न विनाशक बनाता है। ऐसे ही हद का मेरा पन मेरे-मेरे का फेरे में लाता है और बेहद का मेरा-पन जन्मों के फेरों से छुड़ाता है। बेहद का मेरा-पन है ''मेरा बाबा''। तो हद छूट गई ना। अवतार बन देह का आधार ले सेवा के कर्म में आओ। बाप ने लोन अर्थात् अमानत दी है सेवा के लिए। और काई व्यर्थ कार्य में लगा नहीं सकते। नहीं तो अमानत में खयानत का खाता बन जाता है। अवतार व्यर्थ खाता नहीं बनाता। आया सन्देश, दिया और गया। आप सभी भी सेवा-अर्थ सन्देश देने अर्थ ब्राह्मण जन्म में आये हो। ब्राह्मण जन्म अवतरित जन्म है। साधारण जन्म नहीं। तो सदा अपने को अवतरित हुई विश्व कल्याणकारी सदा श्रेष्ठ अवतरित आत्मा हैं – इसी निश्चय और नशे में रहो। टैम्प्रेरी समय के लिए आये हो और फिर जाना भी है। अब जाना है यह साद रहता है। अवतार हैं, आये हैं, अब जाना है। यही स्मृति उपराम और अपरमअपार प्राप्ति की अनुभूति कराने वाले है। एक तरफ उपराम दूसरे तरफ अपरमअपार प्राप्ति। दोनों अनुभव साथ-साथ रहते हैं। ऐसे अनुभवी मूर्त हो ना। अच्छा-

अब सुनने को स्वरुप में लाना है। सुनना अर्था बनना। आज विशेष हमजिन्स से मिलने आये हैं। हमशरीक हो गये ना। सत शिक्षक निमित्त शिक्षकों से मिलने आये हैं। सेवा के साथियों से मिलने आये हैं। अच्छा–

सदा बेहद के मैं-पन से स्मृति स्वरुप, सदा बेहद का मेरा बाप इसी समर्थ स्वरुप में स्थित रहने वाले, सदा ऊंची स्थिति में स्थित रह देह का आधार ले अवतरित होने वाले अवतार बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

टीचर्स के साथ:- सदा सेवाधारी आत्माओं का यह संगठन है ना। सदा अपने को बेहद के विश्व सेवाधारी समझते हो? हद के सेवाधारी तो नहीं हो ना। सब बेहद के हो? किसी को भी किसी स्थान से किसी भी स्थान पर भेज दें तो तैयार हो? सभी उड़ते पंछी हो? अपने देह के भान की डाली से भी उड़ते पंछी हो? सबसे ज्यादा अपने तरफ आकर्षित करने वाले डाली यह देह का भान है। जरा भी पुराने संस्कार, अपने तरफ आकर्षित करते माना देह का भान है। मेरा स्वभाव ऐसा है, मेरा संस्कार ऐसा है, मेरी रहन-सहन ऐसी है, मेरी आदत ऐसी है, यह सब देह भान की निशानी है। तो इस डाली से उड़ते पंछी हो? इसको ही कहा जाता है कर्मातीत स्थिति। कोई भी बन्धन नहीं। कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत हो लेकिन कर्म के बन्धन से न्यारे। तो देह के कर्म, जैसे किसका नेचर होता है – आराम से रहना, आराम से समय पर खाना, चलना यह भी कर्म का बन्धन अपने तरफ खींचता है। इस कर्म के बन्धन अर्थात् आदत से भी परे। क्योंकि निमित्त हो ना।

जब आप सभी निमित्त आत्मायें कर्म के बन्धनों से देह के संस्कार स्वभाव से न्यारे नहीं होंगे तो औरों को कैसे करेंगे! जैसे शरीर की बीमारी कर्म का भाग है, इसी रीति से अगर कोई भी कर्म का बन्धन अपने तरफ खींचता है तो यह भी कर्म का भोग विघ्न डालता है। जैसे शारीरिक व्याधि कर्म भोग अपनी तरफ बार-बार खींचता है दर्द होता है तो खींचता है ना। तो कहते हो क्या करें, वैसे तो ठीक है लेकिन कर्मभोग कड़ा है। ऐसे कोई भी विशेष पुराना संस्कार वा स्वभाव वा आदत अपने तरफ खींचती है तो वह भी कर्म भोग हो गया। कर्मभोग कोई भी कर्मयोगी बना नहीं सकेगा। तो इससे भी पार। क्यों? सभी नम्बरवन जाने वाली आत्मायें हो ना। वन नम्बर का अर्थ ही है हर बात में विन करने वाली। कोई भी कमी नहीं। टीचर्स का अर्थ ही है सदा अपनी मूर्त द्वारा कर्मातीत ब्रह्मा बाप और न्यारे तथा प्यारे बाप की अनुभूति कराने वाले। तो यह विशेषता है ना। फ्रेन्डस हो ना आप! फ्रेन्डस कैसे बनते हैं? बिना समान के फ्रेन्डस नहीं बन सकते। तो आप सब बाप के फैन्डस हो, गाडली फ्रेन्डस हो। समान होना ही फैन्डशिप है। बाप के कदम पर कदम रखने वाले। क्योंकि फ्रेन्डस भी हो और फिर माशूक के आशिक भी हो। तो आशिक सदा माशूक के पांव के ऊपर पांव रखते हैं। यह रसम है ना। जब शादी होती है तो क्या कराते हैं! यही कराते हैं ना। तो यह सिस्टम भी कहां से बनी?

आप लोगों से बनी है। आपका है बुद्धि रुपी पांव और उन्होंने स्थूल पांव समझ लिया है। हर सम्बन्ध से विशेषता का सम्बन्ध निभाने वाली निमित्त आत्मायें हो ?

निमित्त शिक्षकों को औरों से बहुत सहज साधन हैं। दूसरों को तो फिर भी सम्बन्ध में रहना पड़ता है और आपका सम्बन्ध सदा सेवा और बाप से है। चाहे लौकिक कार्य भी करते हो तो भी सदा यही याद रहता है कि टाइम हो और सेवा पर जाएं। और लाकिक कार्य जिसके लिए किया जाता है उसकी स्मृति स्वत: आती है। जैसे लौकिक में माँ-बाप कमाते हैं बच्चे के लिए। तो उनकी स्वत: याद आती है। तो आप भी जिस समय लौकिक कार्य करते हो तो किसके प्रति करते हो? सेवा के लिए करते हो – या अपने लिए? क्योंकि जितना सेवा में लगाते तो उतनी खुशी होती है। कभी लौकिक सेवा समझकर नहीं करो। यह भी एक सेवा का तरीका है, रुप भिन्न है लेकिन है सेवा के प्रति। नहीं तो देखो अगर लौकिक सेवा करके सेवा का साधन नहीं होता तो संकल्प चलता है कि कहां से से आवे! कैसे आवे! चलता नहीं है। पता नहीं कब होगा। यह संकल्प व्यर्थ समय नहीं गंवाता? इसलिए कभी भी लौकिक जॉब (धन्धा) करते हैं, यह शब्द नहीं बोलो। यह अलौकिक जॉब है। सेवा निमित्त है। तो कभी भी बोझ नहीं लगेगा। नहीं तो कभी-कभी भारी हो जाते हैं, कब तक होगा, क्या होगा! यह तो आप लोगों के लिए प्रालब्ध बहुत सहज बनाने का साधन है। तन-मन-धन तीन चीजें हैं ना! अगर तीनों ही चीजें सेवा में लगाते हैं तो तीनों का फल किसको मिलेगा। आपको मिलेगा या बाप को! तीनों ही रीति से अपनी प्रालब्ध बनाना तो यह औरों से एडीशन प्रालब्ध हो गई। इसलिए कभी भी इसमें भारी नहीं। सिर्फ भाव को बदली करो। लौकिक नहीं अलौकिक सेवा के प्रति ही है। इसी भाव को बदली करो। समझा – यह तो और ही डबल सरेन्डर करो? धन से ही सरेन्डर हो गये। सब बाप के प्रति है। सरेन्डर का अर्थ क्या है? जो कुछ है बाप के प्रति है अर्थात् सेवा के प्रति है। यही सरेन्डर है। जो समझते हैं हम सरेन्डर नहीं हैं, वह हाथ उठाओ! उनकी सरेमनी मना लेंगे! बाल बच्चे भी पैदा हो गये और कहते हो सरेन्डर नहीं हुए। अपना मैरेज डे भले मनाओ लेकिन मैरेज हुई नहीं यह तो नहीं कहो। क्या समझते हो? सारा ही ग्रुप सरेन्डर ग्रुप है ना!

बापदादा तो डबल विदेशी वा डबल विदेश के स्थान पर निमित्त बनी हुई टीचर्स की बहुत महिमा करते हैं। ऐसे ही नहीं महिमा करते हैं लेकिन मुहब्बत से विशेष मेहनत भी करते हो। मेहनत तो बहुत करनी पड़ती है लेकिन मुहब्बत से मेहनत महसूस नहीं होती, देखो, कितने दूर-दूर से ग्रुप तैयार करके लाते हैं तो बापदादा बच्चों की मेहनत पर बलिहार जाते हैं। एक विशेषता डबल फारेन के निमित्त सेवाधारियों की बहुत अच्छी है। जानते हो कौन-सी विशेषता है? (अनेक विशेषतायें निकली) जो भी बातें निकाली वह स्वयं में चेक करके कम हो तो भर लेना। क्योंकि बातें तो बहुत अच्छी-अच्छी निकाली हैं। बापदादा सुना रहे हैं – एक विशेषता डबल विदेशी सेवाधारियों में देखी कि जो बापदादा डायरेक्शन देते हैं – यह करके लाना, वह प्रैक्टिकल में लाने के लिए हमेशा कितना भी प्रयत्न करना पड़े लेकिन प्रैक्टिल में लाना ही है, यह लक्ष्य प्रैक्टिकल अच्छा है। जैसे बापदादा ने कहा कि ग्रुप लाने हैं तो ग्रप्स भी ला रहे हैं।

बापदादा ने कहा वी.आई.पीज की सर्विस करनी है, पहले कितना मुश्किल कहते थे, बहुत मुश्किल – लेकिन हिम्मत रखी करना ही है तो अभी देखो २ साल से ग्रुप्स आ रहे हैं ना। कहते थे लण्डन से वी.आई.पी. आना बहुत मुश्किल है। लेकिन अभी देखा प्रत्यक्ष प्रमाण दिखया ना। इस बारी तो भारत वालों ने भी राष्ट्रपति को लाकर दिखाया। लेकिन फिर भी डबल विदेशियों का यह उमंग डायरेक्शन मिला और करना ही है यह लगन अच्छी है। प्रैक्टिकल रिजल्ट देख बापदादा विशेषता का गायन करते हैं। सेन्टर खोलते हो वह तो पुरानी बात हो गई। वह तो खालते ही रहेंगे। क्योंकि वहां साधन बहुत सहज हैं। यहां से वहां जा करके खोल सकते हो, यह भारत में साधन नहीं है। इसलिए सेन्टर खोलना कोई बड़ी बात नहीं लेकिन ऐसे अच्छे-अच्छे वारिस क्वालिटी तैयार करना। एक है वारिस क्वालिटी तैयार करना और दूसरा है बुलन्द आवाज वाले तैयार करना। दोनों ही आवश्यक हैं। वारिस क्वालिटी जो आप जैसे ही सेवा के उमंग-उत्साह में तन-मन-धन सहित रहते हुए भी सरेन्डर बुद्धि हो, इसको कहते हैं वारिस क्वालिटी। तो वारिस क्वालिटी भी निकालनी है। इसके ऊपर भी विशेष अटेन्शन। हरेक सेवाकेन्द्र में ऐसे वारिस क्वालिटी हों तो सेवाकेन्द्र सबसे नम्बरवन में जाता है।

एक है सेवा में सहयोगी होना, दूसरे हैं पूरा ही सरेन्डर होना। ऐसे वारिस कितने हैं? हरेक सेवाकेन्द्र पर ऐसे वारिस हैं। गाडली स्टूडेन्ट बनाना, सेवा में सहयोगी बनना वह लिस्ट तो लम्बी होती है लेकिन वारिस कोई-कोई होते हैं। जिसको जिस समय जो डायरेक्शन मिले, जो श्रीमत मिले उसी प्रमाण चलता रहे। तो दोनों ही लक्ष्य रखो, वह भी बनाना है और वह भी बनाना है। ऐसा वारिस क्वालिटी वाला एक अनेक सेन्टर खोलने के निमित्त बन सकता है। यह भी लक्ष्य से प्रैक्टिकल होता रहेगा। विशेषता तो अपनी समझी ना। अच्छा–

सन्तुष्ट तो हैं ही या पूछना पड़े। है ही सन्तुष्ट करने वाले। तो जो सन्तुष्ट करने वाला होगा वह स्वयं तो होगा ना। कभी सर्विस थोड़ी कम देख करके हलचल में तो नहीं आते हो? कोई सेवाकेन्द्र पर विघ्न आता है तो विघ्न में घबराते हो? समझो बड़े ते बड़ा विघ्न

आ गया – कोई अच्छा अनन्य एन्टी हो जाता है और डिस्टर्ब करता है आपकी सेवा में तो फिर घबरायेंगे। एक होता है उसके प्रति कल्याण के भाव से तरस रखना वह दूसरी बात है लेकिन स्वयं की स्थिति नीचे-ऊपर हो या व्यर्थ संकल्प चले इसको कहते हैं हलचल में आना। तो संकल्प की सृष्टि भी नहीं रचें। यह संकल्प भी हिला न सकें! इसको कहते हैं अचल अडोल स्थिति। ऐसे भी नहीं कि अलबेले हो जाएं कि नथिंगन्यू। सेवा भी करें, उसके प्रति रहमदिल भी बनें लेकिन हलचल में नहीं आयें। तो न अलबेले न फीलिंग में आने वाले। दोनों ही हैं। सदा ही किसी भी वातावरण में, वायुमण्डल में हो लेकिन ऐसे अचल अडोल। कभी कोई निमित्त बने हुए राय देते हैं, उनमें कनफ्यूज होते हो? यह क्यों कहते या यह कैसे होगा! कभी-कभी थोड़ा-सा कनफ्यूज होने का वायब्रेशन आता है। क्योंकि जो निमित्त बने हुए हैं वह अनुभवी हो चुके हैं, और जो प्रैक्टिकल में चलने वाले हैं कोई नये हैं, कोई थोड़े पुराने भी हैं लेकिन जिस समय जो बात उसके सामने आती है, तो बात के कारण इतनी क्लीयर बुद्धि आदि मध्य अन्त को नहीं जान सकती है। सिर्फ वर्तमान को जान सकती है। इसलिए सिर्फ वर्तमान देख करके, आदि मध्य उस समय क्लीयर नहीं होता तो कन-फ्यूज हो जाते हैं। कभी भी कोई डायरेक्शन अगर नहीं भी स्पष्ट हो तो कनफ्यूज कभी नहीं होना। धैर्य से कहो इसको समझने की कोशिश करेंगे। थोड़ा टाइम दो उसको। उसी समय कनफ्यूज होकर यह नहीं, वह नहीं, ऐसे नहीं करो। क्योंकि डबल विदेशी फ्री माइन्ड ज्यादा हैं इसलिए न भी फ्री माइन्ड से कह देते हैं। इसलिए थोड़ा-सा जो भी बात मिलती है – उसको गम्भीरता से पहले सोचो, उसमें कोई न कोई रहस्य अवश्य छिपा होता है। उससे पूछ सकते हो इसका रहस्य क्या है? इससे क्या फायदा होगा? हमें और स्पष्ट समझाओ। यह कह सकते हो। लेकिन कभी भी डायरेकशन को रिफ्यूज नहीं करो। रिफ्यूज करते हो इसलिए कनफ्यूज होते हो। यह थोड़ा विशेष अटेन्शन डबल विदेशी बच्चों को देते हैं। नहीं तो क्या होगा जैसे आप निमित्त बने हुए, बहनों के डायरे-क्शन को जानने का प्रयन्त नहीं करेंगे और हलचल में आ जायेंगे तो आपको देखकर जिन्हों के निमित्त आप बने हो, उन्हों में यह संस्कार भर जायेंगे। फिर कभी कोई रुसेगा, कभी कोई रुसेगा। फिर सेन्टर पर यही खेल चलेगा। समझा!

दूसरी बात:- कभी भी अपने को अभी हम दूसरे धर्म के यहां आये हैं, यह टीचर्स में संकल्प नहीं होना चाहिए। यह नयों की बातें हैं। आप तो पुराने हो तभी निमित्त भी बने हो। हम दूसरे धर्म के इस धर्म में आये हैं, नहीं। इसी धर्म के थे और इसी धर्म में आये हैं। हम और यह अलग हैं, यह संकल्प स्वपन में भी नहीं। भारत अलग है, विदेश अलग है नहीं। यह संकल्प एकमत को दो मत कर देगा। फिर हम और तुम हो गया ना। जहां हम और तुम हो गया वहां क्या होगा? खिटपिट होगी ना। इसलिए एक हैं। डबल विदेशी, बाप-दादा निशानी के लिए कहते हैं, बाकी ऐसे नहीं अलग हो। ऐसे नहीं समझना कि हम डबल विदेशी हैं तो अलग हैं, देश वाले अलग हैं। नहीं। जब ब्राह्मण जन्म हुआ तो ब्राह्मण जन्म से ही कौन हुए? ब्राह्मण एक धर्म के हैं, विदेशी देशी उसमें नहीं होते। हम सब एक ब्राह्मण धर्म के हैं, ब्राह्मण जीवन के हैं और एक ही बात की सेवा के निमित्त हैं। कभी यह भाषा भी यूज नहीं करना कि हामरा विचार ऐसे हैं, आप इन्डिया वालों का ऐसे है, यह भाषा रांग है। गलती से भी ऐसे शब्द नहीं बोलना। विचार भिन्न-भिन्न तो भारत वालों का भी हो सकता है, यह दूसरी बात है। बाकी भारत और विदेश, यह फर्क कभी नहीं करना। हम विदेशियों का ऐसे ही चलता है, यह नहीं। हमारे स्वभाव ऐसे हैं, हमारी नेचर ऐसे है, यह नहीं। ऐसे कभी भी नहीं सोचना। बाप एक है और एक के ही सब हैं। यह निमित्त टीचर्स जैसी भाषा बोलेंगे वैसे और भी बोलेंगे। इसलिए बहुत युक्तियुक्त एक-एक शब्द बोलना। योगयुक्त और युक्तियुक्त दोनों ही साथ-साथ चलें। कोई योग में बहुत आगे जाने का करते लेकिन कर्म में युक्तियुक्त नहीं होते। दोनों का बैलेन्स हो। योग-युक्त की निशानी है ही युक्तियुक्त।

प्रश्न:- इस वर्ष की सेवा के लिए नया प्लैन क्या है?

उत्तर:- इस वर्ष की सेवा के लिए उस दिन भी सुनाया कि समय को समीप लाने के लिए एक तो वृत्ती से वायुमण्डल शक्तिशाली हो? यह स्व के प्रति अटेन्शन और दूसरा औरों की सेवा करने के लिए विशेष ऐसी आत्मायें निकालो जो समझें कि सचमुच शान्ति की विधि यहां से ही मिल सकती है। यह आवाज इस वर्ष में हो कि अगर शान्ति होगी तो इसी विधि से होगी। एक ही विधि है यह, जो विश्व को आवश्यकता है – वह इस विधि के सिवाए नहीं है। यह वातावरण चारों ओर इकट्ठा बनना चाहिए। भारत में चाले विदेश में शान्ति की झलक प्रसिद्ध रुप में होनी चाहिए। चारों ओर से यह सभी को टच होवे, आकर्षण हो तो यथार्थ स्थान है तो यही है। जेसे गवर्मेन्टस की तरफ से यू.एन.ओ. बनी हुई है तो जब भी कुछ होता है तो सभी का अटेन्शन उसी तरफ जाता है। ऐसे जब भी कोई अशान्ति का वातावरण हो तो सबका अटेन्शन शान्ति के शन्देश देने वाली, यह आत्मायें हैं, इस तरफ जावे। अनुभव करें कि अशान्ति से बचने का यही एक स्थान है जहां पनाह ली जा सकती है। इस वर्ष यह वायुमण्डल बनना चाहिए। ज्ञान अच्छा है, जीवन अच्छी है, राजयोग अच्छा है, यह तो सब कहते हैं लेकिन असली प्राप्ती यहां से ही होनी है, विश्व का कल्याण इसी स्थान और विधि से हाना है, यह आवाज बुलन्द हो। समझा– इसके लिए विशेष शान्ति की एडवरटाइज करो, किसको शान्ति चाहिए तो यहां से विधि मिल सकती है। शान्ति सप्ताह रखो, शान्ति के समागम रखो, शान्ति अनुभूति के शिविर रखो, ऐसे शान्ति का वाय-ब्रेशन फैलाओ। अच्छा–

सर्विस में जैसे स्टूडेन्ट बनाते हो वह तो बहुत अच्छा है, वह तो जरुर वृद्धि को प्राप्त करना ही है। लेकिन अभी हर वैरायटी के लोग जैसे काले गोरे भिन्न-भिन्न धर्म की आत्मायें हैं, वैसे भिन्न-भिन्न आक्यूपेशन वाले हर स्थान पर होने चाहिए। कोई कहां भी जावे तो हर आक्यूपेशन वाला अपनी रीति से उन्हें अनुभव सुनाये। जैसे यहां वर्कशाप रखाते हैं – कभी डाक्टर की, कभी वकील की तो भिन्न-भिन्न आक्यूपेशन वाले एक ही शान्ति की बात अपने आक्यूपेशन के आधार से बाले हैं तो अच्छा लगता है। ऐसे कोई भी सेन्टर पर आवे तो हर आक्यूश्पेशन वाले अपना शान्ति का अनुभव सुनायें इसका प्रभाव पड़ता है। सभी आक्यूपेशन वालों के लिए यह सहज विधि है, यह अनुभव हो। जैसे कुछ समय के अन्दर यह एडवरटाइज अच्छी हो गई कि सब धर्म वालों के लिए यही एक विधि है, यह आवाज हो। इसी रीति से अभी आवाज फैलाओ। जो सम्पर्क में आते हैं या स्टूडेन्ट हैं उन्हों तक तो यह आवाज होता है लेकिन अभी थोड़ा और चारों ओर फैले इसका अभी और अटेन्शन। ब्राह्मण भी अभी बहुत थोड़े बने हैं। नम्बरवार ब्राह्मण बनने की जो यह गति है, उसको फास्ट नहीं कहेंगे ना। अभी तो कम से कम नौ लाख तो चाहिए। कम से कम सतयुग की आदि में नौ लाख के ऊपर तो राज्य करेंगे ना! एक लाख पर तो नहीं करेंगे। उसमें प्रजा भी होगी लेकिन सम्पर्क में अच्छे आयेंगे तब तो प्रजा बनेंगे। तो इस हिसाब से गति कैसी होनी चाहिए। अभी तो संख्या बहुत कम है। अभी टोटल विदेश की संख्या कितनी होगी? कम से कम विदेश की संख दो-तीन लाख तो होनी चाहिए। मेहनत तो अच्छी कर रहे हो, ऐसी कोई बात नहीं है लेकिन थोड़ी स्पीड और तेज होनी चाहिए। स्पीट तेज होगी तो जनरल वातावरण से। अच्छा।

प्रश्नः- ऐसा वावरफुल वातावरण बनाने की युक्ति क्या है?

उत्तरः- स्वयं पावरफुल बनो। उसके लिए अमृतवेले से लेकर कम में अपनी स्टेज शक्तिशाली है या नहीं, उसकी चेकिंग के ऊपर और थोड़ा विशेष अटेन्शन। दूसरों की सेवा में या सेवा के प्लैन्स में बिजी होने से अपनी स्थिति में कहां-कहां हल्कापन आ जाता है। इसलिए यह वातावरण शक्तिशाली नहीं होता। सेवा होती है लेकिन वातावरण शक्तिशाली नहीं होता है। इसके लिए अपने ऊपर विशेष अटेन्शन रखना पड़े। कर्म और योग, कर्म के साथ शक्तिशाली स्टेज, इस बैलेन्स की थोड़ी कमी है। सिर्फ सेवा में बिजी होने के कारण स्व की स्थिति शक्तिशाली नहीं रहती। जितना समय सेवा में देते हो, जितना तन-मन-धन सेवा में लगाते हैं, उसी प्रमाण एक का लाख गुणा जो मिलना चाहिए वह नहीं मिलता है। इसका कारण है, कर्म और योग का बैलेन्स नहीं है। जैसे सेवा के प्लैन बनाते हो, पर्चे छपाते हो, टी.वी., रेडियो में करना है। जैसे वह बाहर के साधन बनाते हो वैसे पहले अपनी मंसा शक्तिशाली का साधन विशेष्ज्ञ होना चाहिए। यह अटेन्शन कम है। फिर कह देते हो, बिजी रहे इसलिए थोड़ा-सा मिस हो गया। फिर डबल फायदा नहीं हो सकता।

प्रश्नः- कई ब्राह्मण आत्माओं पर भी ईविल सोल्स का प्रभाव पड़ जाता है, उस समय क्या करना चाहिए?

उत्तरः- इसके लिए सेवाकेन्द्र का वातावरण बहुत शक्तिशाली सदा रहना चाहिए। और साथ अपना भी वातावरण शक्तिशाली रहे। फिर यह ईविल स्प्रिट कुछ नहीं कर सकती है। यह मन को पकड़ती हैं। मन की शक्ति कमजोर होने के कारण ही इसका प्रभाव पड़ जाता है तो शुरु से पहले ही उसके प्रति ऐसे योगयुक्त आत्मायें विशेष योग भट्ठी रख करके उसको शक्तिदें और वह जो योग-युक्त ग्रुप है वह समझे कि हमको यह विशेष कार्य करना है, जैसे और प्रोग्राम होते हैं वैसे यह प्रोग्राम इतना अटेन्शन से करें तो फिर शुरु में उस आत्मा को ताकत मिलने से बज सकती हैं। भले वह आत्मा परवश होने के कारण योग में नहीं भी बैठ सके, क्योंकि उसके ऊपर दूसरे का प्रभाव होता है, तो वह भले ही न बैठे लेकिन आप अपना कार्य निश्चय बुद्धि हो करके करते रहो। तो धीरे-धीरे उसकी चंचलता शान्त होती जायेगी। वइ ईविल आत्मा पहले आप लोगों के ऊपर भी वार करने की कोशिश करेगी लेकिन आप समझो यह कार्य करना ही है, डरो नहीं तो धीरे-धीरे उसका प्रभाव हट जायेगा।

प्रश्नः- सेवाकेन्द्र पर अगर कोई प्रवेशता वाली आत्मायें ज्ञान सुनने के लिए आती हैं तो क्या करना चाहिए?

उत्तरः- अगर ज्ञान सुनने से उसमें थोड़ा-सा भी अन्तर आता है या सेकण्ड के लिए भी अनुभव करती है तो उसको उल्लास में लाना चाहिए। कई बार आत्मायें थोड़ा-सा ठिकाना न मिलने के कारण भी आपके पास आती हैं, बदलने के लिए आया है या वैसे ही पाग-लपन में जहां रास्ता मिला, आ गया है यह परखना चाहिए। क्योंकि कई बार ऐसे पागल होते हैं जो जहां भी देखेंगे दरवाजा खुला है वहां जायेंगे। होश में नहीं होते हैं। तो ऐसे भी कई आयेंगे लेकिन उसको पहले परखना है। नहीं तो उसमें टाइम वेस्ट हो जायेगा। बाकी कोई अच्छे लक्ष्य से आया है, परवश है तो उसको शक्ति देना अपना काम है। लेकिन ऐसी आत्माओं की कभी भी अकेले में अटेन्ड नहीं करना। कुमारी कोई ऐसी आत्मा को अकेले में अटेन्ड न करें क्योंकि अकेला कुमारी को देख पागर का पागलपन और निकलता है। इसलिए ऐसी आत्माये अगर समझते हो योग्य हैं तो उन्हों ऐसा टाइम दो जिस टाइम दो-तीन और हों या कोई जिम्मे-वार, कोई बुजुर्ग ऐसा हो तो उस समय उसको बुलाकर बिठाना चाहिए। क्योंकि जमाना बहुत गन्दा है और बहुत बुरे संकल्प वाले लोग हैं। इसलिए थोड़ा अटेन्शन रखना भी जरुरी है। इसमें बहुत क्लीयर बुद्धि चाहिए। क्लीयर बुद्धि होगी तो हरेक के वायब्रेशन से कैच कर सकेंगे कि यह किस एम से आया है।

प्रश्न:- आजकल किसी-किसी स्थान पर चोरों और भय का वातावरण बहुत हैं – उनसे कैसे बचे ?

उत्तर:- इसमें योग की शक्ति बहुत चाहिए। मान लो कोई आपको डराने के ख्याल से आता है तो उस समय योग की शक्ति दो। अगर थोड़ा कुछ बोलेंगे तो नुकसान हो जायेगा। इसलिए ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति दो। उस समय पर अगर थोड़ भी कुछ कहा तो उन्हों में जैसे अग्नि में तेल डाला। आप ऐसे रीति से रहो जैसे बेपरवाह हैं, हमको कोई परवाह नहीं है। जो करता है उसको साक्षी होकर अन्दर शान्ति की शक्ति दो तो फिर उसके हाथ नहीं चलेंगे। वह समझेंगे इनको तो कोई परवाह नहीं है। नहीं तो डराते हैं, डर गये या हलचल में आये तो वह और ही हलचल में लाते हैं। भय भी उन्हों को हिम्मत दिलाता है इसलिए भय में नहीं आना चाहिए। ऐसे टाइम पर साक्षीदृष्टा की स्थिति यूज करनी है। अभ्यास चाहिए ऐसे टाइम।

प्रश्न:- ब्लैसिंग जो बापदादा द्वारा मिलती है, उनका गलत प्रयोग क्या है ?

उत्तर:- कभी-कभी जैसे बापदादा बच्चों को सर्विसएबल या अनन्य कहते हैं या कोई विशेष टाइटल देते हैं तो उस टाइटल को मिस-यूज कर लेते हैं, समझते हैं मैं तो ऐसा बन ही गया। मैं तो हूँ ही ऐसा। ऐसा समझकर अपना आगे का पुरुषार्थ छोड़ देते हैं, इसको कहते हैं – मिसयूज अर्थात् लगत प्रयोग। क्योंकि जो बापदादा वरदान देते हैं, उस वरदान को स्वयं के प्रति और सेवा के प्रति लगाना यह है सही रीति से यूज करना और अलबेला बन जाना यह है मिसयूज करना।

प्रश्न:- बाइबिल में दिखाते हैं – अन्तिम समय में एन्टी क्राइस्ट का रुप होगा, इसका रहस्य क्या है ?

उत्तर:- एन्टी क्राइस्ट का अर्थ है उस धर्म के प्रभाव को कम करने वाले। आजकल देखो उसी क्रिश्चियन धर्म में क्रिश्चियन धर्म की वैल्यू को कम समझते जा रहे हैं, उसी धर्म वाले अपने धर्म को इतना शक्तिशाली नहीं समझते और दूसरों में शक्ति ज्यादा अनुभव करते हैं, यही एन्टी क्राइस्ट हो गये। जैसे आजकल के कई पादरी ब्रह्मचर्य को महत्व नहीं देते और उन्हों को गृहस्थी बनाने की प्रेरणा देने शुरु कर दी है तो यह उसी धर्म वाले जैसे एन्टी क्राइस्ट हुए। अच्छा।

26-2-84

## बापदादा की अद्भुत चित्रशाला

दिलाराम बापदादा अपने समीप और समान बच्चों प्रति बोले:-

''बापदादा आज अपनी चित्रशाला को देख रहे हैं। बापदादा को चित्रशाला है यह जानते हो ? आज वतन में हर बच्चे के चरित्र का चित्र देख रहे थे। हर एक का आदि से अब तक का चरित्र का चित्र कैसा रहा ! तो सोचो चित्रशाला कितनी बड़ी होगी ! उस चित्र में रहेक बच्चे की विशेष तीन बातें देखीं ! उस चित्र में रहेक बच्चे की विशेष तीन बातें देखी ! एक– पवित्रता की पर्सनैलिटी। दूसरा – रीयल्टी की रायल्टी। तीसरा – सम्बन्घों की समीपता। यह तीन बातें हरेक चित्र में देखीं।

प्युरिटी की पर्सनैलिटी आकार रुप में चित्र के चारों ओर चमकती हुई लाइट दिखाई दे रही थी। रीयल्टी की रायल्टी चेहरे पर हर्षित-मुख्ता और स्वच्छता चमक रही थी और सम्बन्धों की समीपता मस्तक बीच चमकता हुआ सितारा कोई ज्यादा चारों ओर फैली हुई किरणों से चमक रहा था, कोई थोड़ी-सी किरणों से चमक रहा था। समीपता वाली आत्मायें बाप समान बेहद की अर्थात् चारों ओर फैलती हुई किरणों वाली थीं। लाइट और माइट दोनों में बाप समान दिखाई दे रही थीं। ऐसे तीनों विशेषताओं से हरेक चरित्र का चित्र देखा। साथ-साथ आदि से अन्त अर्थात् अब तक तीनों ही बातों में सदा श्रेष्ठ रहे हैं वा कब कैसे कब कैसे रहे हैं उसकी रिजल्ट हर-एक के चित्र के अन्दर देखी। जैसे स्थूल शरीर में नब्ज से चेक करते हैं कि ठीक गति से चल रही है वा नीचे ऊपर होती है। तेज है वा स्लो है। इससे तन्दरुस्ती का मालूम पड़ जाता है। ऐसे हर चित्र के बीच हृदय लाइट नीचे से ऊपर तक जा रही थी। उसमें गति भी दिखाई दे रही थी कि एक ही गति से लाइट नीचे से ऊपर जा रही है या समय प्रति समय गति में अन्तर आता है। साथ-साथ बीच-बीच में लाइट का कलर बदलता है वा एक ही जैसा रहा है। तीसरा – चलते-चलते लाइट कहां-कहां रुकती है वा लगातार चलती रहती है। इसी विधि द्वारा हरेक के चरित्र का चित्र देखा। आप भी अपना चित्र देख सकते हो ना।

पर्सनैलिटी, रायल्टी और समीपता इन तीन विशेषताओं से चे करो कि मेरा चित्र कैसा होगा। मेरे लाइट की गति कैसी होगी। नम्बर-वार तो हैं ही। लेकिन तीनों विशेषतायें और तीनों प्रकार की लाइट की गति आदि से अब तक सदा ही रही हो– ऐसे चित्र मैजारिटी नहीं लेकिन मैनारटी में थे। तीन लाइटस की गति और तीन विशेषतायें छह बातें हुई ना। छह बातों में से मैजारिटी चार-पांच तक और कुछ तीन तक थे। प्युरिटी की पर्सनैलिटी का लाइट का आकार किसका सिर्फ ताज के समान फेस के आसपास था। और किसका आधो शरीर तक। जैसे फोटो निकालते हो ना। और किसका आधे शरीर तक। जैसे फोटो निकालते हो ना। और किसका सारे शरीर के आस-पास दिखाई दे रहा था। जो मंसा-वाचा-कर्मणा तीनों में आदि से अब तक पवित्र रहे हैं। मंसा में स्वयं प्रति या किसी प्रति व्यर्थ रुपी अपवित्र संकल्प भी न चला हो। किसी भी कमजोरी वा अवगुण रुपी अपवित्रता का संकल्प भी धारण नहीं कया हो, संकल्प में जन्म से वैष्णव संकल्प बुद्धि का भोजन है। जन्म से वैष्णव अर्थात् अशुद्धि वा अवगुण, व्यर्थ संकल्प को बुद्धि

द्वारा, मंसा द्वारा ग्रहण न किया हो। इसी को ही सच्चा वैष्णव का बाल ब्रह्मचारी कहा जाता है। तो हरेक के चित्र में ऐसे प्युरिटी की पर्सनैलिटी की रेखायें लाइट के आकार द्वारा देखीं। जो मंसा-वाचा-कर्मणा तीनों में पवित्र रहे हैं! (कर्मणा में सम्बन्ध, सम्पर्क सब आ जाता है) उनका मस्तक से पैर तक लाइट के आकार में चमकता हुआ चित्र था। समझा! नालेज के दर्पण में अपना चित्र देख रहे हो? अच्छी तरह से देख लेनाकि मेरा चित्र क्या रहा जो बापदादा ने देखा। अच्छा!

मिलने वालों की लिस्ट लम्बी है। अव्यक्त वतन में तो न नम्बर मिलेगा औरन समय की कोई बात है। जब चाहे जितना समय चाहे और जितने मिलने चाहें मिल सकते हैं। क्योंकि वह हद की दुनिया से परे हैं। इस साकार दुनिया में यह सब बन्धन हैं। इसलिए र्निबन्धन को भी बन्धन में बंधना पड़ता है। अच्छा-

टीचर्स तो सन्तुष्ट हो गये ना। सभी को अपना पूरा हिस्सा मिला ना। निमित्त बनी हुई विशेष आत्मायें हैं। बापदादा भी विशेष आत्माओं का विशेष रिगार्ड रखते हैं। फिर भी सेवा के साथी हैं ना। ऐसे तो सभी साथी हैं फिर भी निमित्त को निमित्त समझने में ही सेवा की सफलता है। ऐसे तो सर्विस में कई बच्चे बहुत तीव्र उमंग उत्साह में बढ़ते रहते हौ फिर भी निमित्त बनी हुई विशेष आत्माओं को रिगार्ड देना अर्था बाप को रिगार्ड देना है और बाप द्वारा रिगार्ड के रिटर्न में दिल का स्नेह लेना है। समझा! टीचर्स को रिगार्ड नहीं देते हो लेकिन बाप से दिल के स्नेह का रिटर्न लेते हो। अच्छा-

ऐसे सदा दिलाराम बाप द्वारा दिल का स्नेह लेने के पात्र अर्थात् सुपात्र आत्माओं को सदा स्वयं को प्युरिटी की पर्सनैलिटी, रायल्टी की रीयल्टी में अनुभव करने वाले समीप और समान बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।''

यु.के.ग्रुप से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

सभी सर्व राज़ो से सम्पन्न राज़युक्त, योगयुक्त आत्मायें हो ना! शुरु से बापदादा का नाम चारों ओर प्रत्यक्ष करने के निमित्त आत्मायें हो। बापदादा ऐसे आदि रत्नों को, सेवा के साथियों को देखकर सदा खुश होते हैं। सभी बापदादा के राइट-हैण्ड ग्रुप हो। बहुत अच्छे-अच्छे रत्न हैं। कोई कौन सा, कोई कौन सा, लेकिन हैं सब रत्न। क्योंकि स्वयं अनुभवी बन औरों को भी अनुभवी बनाने के निमित्त बनी हुई आत्मायें हो। बापदादा जानते हैं कि सभी कितने उमंग उत्साह से याद और सेवा में सदा मगन रहने वाली आत्मायें हैं। याद और सेवा के सिवाए और सब तरफ समाप्त हो गये। बस एक हैं, एक के हैं, एकरस स्थिति वाले हैं यही सबका आवाज है। यही वास्तविक श्रेष्ठ जीवन है। ऐसी श्रेष्ठ जीवन वाले सदा ही बापदादा के समीप हैं। निश्चयबुद्धि का प्रत्यक्ष प्रमाण देने वाले हैं। सदा वाह मेरा बाबा और वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य – यही याद रहता है ना। बापदादा ऐसे स्मृति स्वरुप बच्चों को देखकर सदा हर्षित होते हैं कि वाह मेरे श्रेष्ठ बच्चे। बापदादा ऐसे बच्चों के गीत गाते हैं। लण्डल विदेश के सेवा का फाउण्डेशन हैं। आप सब सेवा के फाउन्डेशन स्टोन हो। आप सबके पक्के होने के प्रभाव से सेवा में वृद्धि होती जा रही है। भले फाउण्डेशन वृक्ष के विस्तार को सुन्दर देख उस समय ज्यादा नजर होती है। फाउन्डेशन गुप्त रह जाता है। ऐसे आप भी थोड़ा सा निमित्त बन औरों को चांस देने वाले बन गये लेकिन फिर भी आदि, आदि है। औरों को चांस देकर आगे लाने में आपको खुशी होती है ना। ऐसे तो नहीं समझते हो कि यह डबल विदेशी आये हैं तो हम छिप गये हैं? फिर भी निमित्त आप ही हैं। उन्हों को उमंग-उत्साह देने के निमित्त् हो। जो दूसरों को आगे रखता है वह स्वयं आगे ही है। जैसे छोटे बच्चे को सदा कहते हैं आगे चलो, बड़े पीछे रहते हैं। छोटों को आगे करना ही बड़ों का आगे होना है। उसका प्रत्यक्षफल मिलता ही रहता है। अगर आप लोग सहयोगी बनते तो लण्डन में इतने सेन्टर नहीं खुलते। कोई कहाँ निमित्त बन गये कोई कहां निमित्त बन गये। अच्छा:-

मलेशिया, सिंगापुर:- सभी अपने को बाप की स्नेही आत्मायें अनुभव करते हो! सदा एक बाप दूसरा न कोई इसी स्थिति में स्थित रहते हो! इसी स्थिति को ही एकरस स्थिति कहा जता है। क्योंकि जहां एक हैं वहां एकरस हैं। अनेक हैं तो स्थिति भी डगमग होती है। बाप ने सहज रास्त बताया है कि एम में सब कुछ देखो। अनेकों को याद करने से, अनेक तरफ भटकने से छूट गये। एक हैं, एक के हैं, इसी एकरस स्थिति द्वारा सदा अपने को आगे बढ़ा सकते हो।

सिंगापुर और हांगकांग को अभी चाइना में सेनटर खोलने का संकल्प करना चाहिए। सारे चाइना में अभी कोई केन्द्र नहीं है। उनहों को कनेक्शन में लाते हुए अनुभव कराओ। हिम्मत में आकर संकल्प करो तो हो जायेगा। राजयोग से प्रभु प्रेम, शान्ति, शक्ति का अनुभव कराओ, तो आत्मायें आटोमेटिकली परिवर्तन हो जायेंगी। राजयोगी बनाओ, डीटी नहीं बनाओ, राजयोगी डीटी आपेही बन जायेंगे। अच्छा–

28-2-84

## ''प्राण अव्यक्त बापदादा द्वारा झण्डारोहण''

**आज 84वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती के उपलक्ष्य में ओम् शान्ति भवन की स्टेज पर खड़े होकर स्वयं मीठे बाबुल ने झण्डा लहराया** तथा सभी बच्चों के प्रति मधुर सन्देश में कहा–

''बाप कहते हैं बच्चों को झन्डा सदा महान है। बच्चे नहीं होते तो बाप भी क्या करते। आप कहते हैं बाप का झण्डा सदा महान...

(गीत बज रहा था) और बाप कहते हैं बच्चों का झण्डा सदा महान। सदा सभी बच्चों के मस्तक पर विजय का झण्डा लहरा रहा है। सबके नयनों में, सबके मस्तक में विजय का झण्डा लहराया हुआ है। बापदादा देख रहे हैं – एक यह झण्डा नहीं लहराया लेकिन सबके मस्तक के साथ-साथ् विजय का झण्डा अविनाशी लहराया हुआ है।

बाप और बच्चों के वन्डरफुल बर्थ डे की मुबारक

चारों ओर के अति स्नेही, सेवा के साथी, सदा कदम में कदम रखने वाले बच्चों को इस अलौकिक ब्राह्मण जीवन की बर्थ डे की मुबारक हो। सदा सभी बच्चों को बापदादा यादप्यार और मुबारक की रिटर्न में स्नेह भरी बांहों की माला पहनाते हुए मुबारक दे रहे हैं। सभी बच्चों को यह अलौकिक बर्थ-डे विश्व की हर आत्मा यादगार रुप में मनाती ही आती है क्योंकि बाप के साथ बच्चों ने भी ब्राह्मण जीवन में सर्व आत्मओं को बहुत,बहुत, बहुत सुख-शान्ति, खुशी और शक्ति का सहयोग मिला है। इस सहयोग के कारण सब दिल से शिव और सालीग्राम दोनों का बर्थ-डे शिव जयन्ती मनाते हैं। तो ऐसे सालीग्राम बच्चों को शिव बाप और ब्रह्मा बाप दोनों की सदा पदमगुणा बधाईयां हों, बधाईयां हों। सदा बधाई हो, सदा वृद्धि हो और सदा विधिपूर्वक सिद्धि को प्राप्त हो। अच्छा– सभी को गुडमार्निंग।

अव्यक्त महावाक्य

''आज भोलनाथा बाप अपने भोले बच्चों से बच्चो का सो बाप का सो बच्चों का अवतरण दिवस अर्थात् अलौकिक रुहानी जयन्ती मनाने आये हैं। भोलनाथा बाप को सबसे प्रिय भोले बचे हैं। भोले अर्थात् जो सदा सरल स्वभाव, शुभ भाव और स्वच्छता सम्पन्न मन और कर्म दोनों में सच्चाई और सफाई, ऐसे भोले बच्चे भोलानाथ बाप को भी अपने ऊपर आकर्षित करते हैं। भोलानाथ बाप ऐसे सरल स्वभाव भोले बच्चों के गुणों की मालासदा ही सिमरण करते रहते हैं। आप सभी ने अनके जन्मों में बाप के नाम की माला सिमरण की और बाप अभी संगमयुग पर बच्चों को रिटर्न दे रहे हैं। बच्चों की गुण माला सिमरण करते हैं। कितने भोले बच्चे भोलानाथ को प्यारे हैं। जितना ज्ञान स्वरुप, नालेजफुल, पावरफुल उतना ही भोलापन। भगवान को भोलापन प्यारा है। ऐसे अपने श्रेष्ठ भाग्य को जानते हो ना। जो भगवान को मोह लिया। अपना बना दिया।

आज भक्तों और बच्चों दोनों का विशेष मनाने का दिन है। भक्त तैयारियां कर रहे हैं, आह्वान कर रहे हैं और आप सम्मुख बैठे हो। भक्तों की लीला भी बाप देख-देख मुस्कराते हैं और बच्चों की मिलन लीला देख-देख हर्षाते हैं। एक तरफ वियोगी भक्त आत्मायें, दूसरे तरफ सहज योगी बच्चे। दोनों ही अपनी-अपनी लगन से प्रिय हैं। भक्त भी कोई कम नहीं हैं। कल के दिन आकारी इष्ट रुप में चक्र लगाकर देखना। बाप के साथ सालीग्राम बच्चों को भी विशेष रुप से पूजा होगी। अपना पूजन बाप के साथ भक्तों का देखना। अभी अन्त तक भी नौधा भक्त कोई-कोई हैं जो सच्चे स्नेह से भक्ति कर भकति की भावना का अल्प समय का फल अनुभव करते हैं। कल का दिन भक्तों के भक्ति की विशेष लगन का दिन है। समझा!

आप सभी बाप की जयन्ती मनायेंगे या अपनी? सारे कल्प में बाप और बच्चों एक एक ही बर्थ-डे हो – यह हो सकता है? भल दिन वो ही हो, वर्ष वह नहीं हो सकता। बाप और बच्चे का अन्तर तो हागा ना। लेकिन अलौकिक जयन्ती बाप और बच्चों की साथ-साथ है। आप कहेंगे हम बाप का बर्थ डे मनाते हैं और बाप कहते – बच्चों का बर्थ डे मनाते हैं। तो वन्डरफुल बर्थ-डे हो गया ना। अपना भी मनाते बाप का भी मनाते। इससे ही सोचों कि भोलनाथा बाप का बच्चों के साथ कितना स्नेह हैं जो जनम दिन भी एक ही है। तो इतना मोह लिया ना – भोलनाथ को। भक्त लोग अपने भक्ति की मस्ती में मस्त हो जाते हैं और आप ''पा लिया'' इसी खुशी में साथ-साथ मनाते गाते नाचते हो। यादगार जो बनाया है उसमें ही बहुत रहस्य समाया हुआ है।

पूजा में, चित्रों में दो विशेषतायें विशेष हैं। एक तो है बिन्दू की विशेषता और दूसरी है – बूँद-बूँद की विशेषता। पूजा की विधि में बूँद-बूँद का महत्व है। इस समय आप बच्चे बिन्दू के रहस्य में स्थित होते हो। विशेष सारे ज्ञान का सार एक बिन्दू शब्द में समाया हुआ है। बाप भी बिन्दू, आप आत्मायें भी बिन्दू और ड्रामा का ज्ञान धारण करने के लिए जो हुआ – फिनिश अर्थात् फुलस्टाप। बिन्दू लगा दिया। परम आत्मा, आत्मा और यह प्रकृति का खेल अर्थात् ड्रामा तीनों का ज्ञान प्रैक्टिकल लाइफ में बिन्दू ही अनुभव करते हो ना। इसलिए भक्ति में भी प्रतिभा के बीच बिन्दू का महत्व है। दूसरा है। बूँद का महत्व– आप सभी याद में बैठते हो या किसी को भी याद में बिठाते हो तो किस विधि से कराते हो? संकल्पों की बूँदों द्वारा – मैं आत्मा हूँ, यह बूँद डाजी। बाप का बच्चा हूँ – यह दूसरी बूँ। ऐसे शुद्ध संकल्प की बूँद द्वारा मिलन की सिद्धि को अनुभव करते हो ना। तो एक है शुद्ध संकल्पों की स्मृति की बूँद। दूसरा जब रुह-रुहान करते हो, बाप की एक-एक महिमा और प्राप्ति के शुद्ध संकल्प की बूँद डालते हो ना। आप ऐसे हो, आपने हमको यह बनाया। यही मीठी-मीठी शीतल बूँदे बाप के ऊपर डालते अर्थात् बाप से रुह-रुहाण करते हो। एक-एक बात करके सोचते हो ना, इकट्ठा ही नहीं। तीसरी बात – सभी बच्चे अपने तन-मन-धन से सहयोग की बूँद डालते। इसलिए आप लोग विशेष कहते हो फुरीफुरी तालाब। इतना बड़ा विश्व परिवर्तन का कार्य, सर्व शक्तिमान को बेहद का विशाल कार्य उसमें आप हरेक जो भी सहयोग देते हो, बूँद समान ही तो सहयोग है। लेकिन सभी की बूँद-बूँद के सहयोग से, सहयोग का विशाल सागर बन जाता

है। इसलिए पूजा की विधि में भी बूँद का महत्व दिखाया है।
विशेष व्रत की विधि दिखाते हैं। व्रत लेते हो ना। आप सभी बाप के सहयोगी बनने में व्यर्थ संकल्प के भोजन का व्रत लेते हो कि कभी भी बुद्धि में अशुद्ध व्यर्थ संकल्प स्वीकार नहीं करेंग। यह व्रत अर्थात् दृढ़ संकलप लेते हो और भक्त लोग अशुद्ध भोजन का व्रत रखते हैं। और साथ-साथ आप सदा के लिए जागती ज्योति बन जाते हो और वह उसके याद स्वरुप में जागरण करते हैं। आप बच्चों के अविनाशी रुहानी अन्तर्मुखी विधियों को भक्तों ने स्थूल बाहरमुखी विधियां बना दी हैं। लेकिन कापी आप लोगों को ही की है। जो कुछ टच हुआ राजोप्रधान बुद्धि होने कारण ऐसे ही विधि बना दी। वैसे रजोगुणी नम्बरवन भक्त और भक्ति के हिसाब से सतोगुणी भक्त तो ब्रह्मा और आप सभी विशेष आत्मायें निमित्त बनते हो। लेकिन पहले मंसा स्नेह और मंसा शक्ति होने के कारण मानसिक भाव की भक्ति शुरु होती है। यह स्थूल विधियां पीछे-पीदे धीरे-धीरे ज्यादा होती है। फिर भी रचयिता बाप अपने भक्त आत्मायें रचना को और उन्हों की विधियों को देख यही कहेंगे कि इन भक्तों के टचिंग की बुद्धि की भी कमाल है। फिर भी इन विधियों द्वारा बुद्धि को बिजी रखने से, विकारों में जाने से कुछ न कुछ किनारा तो किया ना। समझा– आपके यथार्थ सिद्धि की विधि भक्ति में क्या-क्या चलती आ रही है।यह है यादगार का महत्व।
डबल विदेशी बच्चे तो भक्ति देखने से किनारे में रहते हैं। लेकिन आप सबके भक्त हैं। तो भक्तों की लीला आप बच्चे अनुभव करते हो कि हम पूज्य आत्मओं को अभी भी भक्त आत्मायें कैसे पूजन भी कर रही हैं और आह्चान भी कर रही हैं। ऐसे महसूस करते हो ? कभी अनुभव होता है – भक्तें की पुकार का। रहम आता है भक्तों पर। भक्तों का ज्ञान भी अच्छी तरह से है ना! भक्त पुकरें और आप समझो नहीं तो भक्तों का क्या होगा। इसलिए भक्त क्या हैं, पुजारी क्या हैं, पूज्य क्या है इस राज को भी अच्छी तरह से जानते हो। पूज्य और पुजारी के राज को जानते हो ना। अच्छा। कभी भक्तों की पुकार का अनुभव होता है? पाण्डवों को भी होता है वा सिर्फ शक्तियों को हाता है। सालीग्राम तो ढेर होते हैं। लाखों की अन्दाज में। लेकिन देवतायें लाखों की अन्दाज में नहीं होते। चाहे देवियां वा देवतायें हजारों की अन्दाज में होंगे। लोखों की अन्दाज में नहीं होगा। अच्छा– इनका राज भी फिर कभी सुनायेंगे। डबल विदेशियों में भी जो आदि में आये हैं, ज्यादा में ज्यादा कितने वर्ष हुए? नौ-दस वर्ष। तो जो शुरु में एग्जैम्पल बने हैं चाहे शक्तियां अथवा पाण्डव। उन्हों की भी विशेषता है ना। बाप तो सबसे पहले बड़ा विदेशी है। सबसे ज्यादा समय विदेश में कौन रहता है? बाप रहता है ना।
अभी दिन प्रतिदिन जितना आगे समय आयेगा उतना भक्तों के आह्वान का आवाज उन्हों की भावनायें सब आपके पास स्पष्ट रुप में अनुभव होंगी। कौन-सी इष्ट देवी वा देवता ही वो भी मालूम पड़ेगा। थोड़े पक्के हो जाओ फिर यह सब दिव्य बुद्धि की टचिंग द्वारा ऐसा अनुभव होगा जैसे दिव्य दृष्टि से स्पष्ट दिखाई देता है। अभी तो सज रहे हो इसलिए प्रत्यक्षता का पर्दा नहीं खुल रहा ह। जब सज जायेंगे तब पर्दा खुलेगा। और स्वयं को भी देखेंगे। फिर सबके मुख से निकलेगा कि यह फलानी देवी भी आ गई। फलाना देवता भी आ गया। अच्छा–
सदा भोलेनाथ बाप के सरलचित, सहज स्वभाव वाले सहज योगी, भोले बच्चे, सदा बिन्दी और बूँद के रहस्य को जीवन में धारण करने वाले, धारणा स्वरुप आत्मायें, सदा मन, वाणी कर्म में दृढ़ संकल्प का व्रत लेने वाली ज्ञानी तू आत्मायें, सदा अपने पूज्य स्वरुप में स्थित रहने वाली पूज्य आत्मओं को भोलानाथ, वरदाता, विधाता बाप का यादप्यार और नमस्ते।''

1-3-84

## एक का हिसाब

स्नेह में लवलीन बच्चों प्रति अति मीठे बाबा बोले –
''आज सर्व सहजयोगी, सदा सहयोगी बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। सर्व तरफ से आये हुए बाप के बच्चे एक बल एक भरोसा, एक मत, एकरस, एक ही के गुण गाने वाले, एक ही के साथ सर्व सम्बन्ध निभाने वाले, एक के साथ सदा रहने वाले, एक ही प्रभु परिवार के एक लक्ष्य, एक ही लक्षण सर्व को एक ही शुभ और श्रेष्ठ भावना से देखने वाले, सर्व को एक ही श्रेष्ठ शुभ कामना से सदा ऊंचा ऊड़ाने वाले, एक ही संसार, एक ही संसार में सर्व प्राप्ति का अनुभव करने वाले, आंख खोलते बाब। हर एक काम करते एक साथी बाबा, दिन समाप्त करते कर्मयोग वा सेवा का कार्य समाप्त करते एक के लव में लीन हो जाते, एक के साथ लवलीन बन जातो अर्थात् एक के स्नेह रुपी गोदी में समा जाते। दिन रात एक ही के साथ दिनचर्या बिताते। सेवा के सम्बन्ध में आते, परिवार के सम्बन्ध में आते फिर भी अनेक में एक देखते। एक बाप का परिवार है। एक बाप ने सेवा प्रति निमित्त बनाया है। इसी विधि से अनेकों के सम्बन्ध सम्पर्क में आते, अनेक में भी एक देखते। ब्राह्मण जीवन में, हीरो पार्टधारी बनने की जीवन में, पास विद् आनर बनने की जीवन में, सिर्फ सीखना है तो क्या? एक का हिसाब। बस एक को जाना तो सब कुछ जाना। सब कुछ पाया। एक लिखना, सीखना, याद करना, सबसे सरल, सहज है।

वैसे भी भारत में कहावत है तीन-पाँच की बातें नहीं करो। एक की बात करो। तीन-पाँच की बातें मुश्किल होती हैं, एक को याद करना, एक को जानना अति सहज है। तो यहाँ क्या सीखते हो? एक ही सीखते हो ना। एक में ही पदम समाए हुए हैं। इसीलिए बापदादा सहज रास्ता एक का ही बताते हैं। एक का महत्व जानो और महान बनो। सारा विस्तार एक में समाया हुआ है। सब ज्ञान आ गया ना। डबल फारेनर्स तो एक को अच्छी तरह जान गये हैं ना। डबल फारेनर्स तो एक को अच्छी तरह जान गये हैं ना! अच्छा– आज सिर्फ आये हुए बच्चों को रिगार्ड देने के लिए, स्वागत करने के लिए एक का हिसाब सुना दिया।

बापदादा आज सिर्फ मिलने के लिए आये हैं। फिर भी सिकीलधे बच्चे जो आज वा कल आये हैं उनहों के निमित्त कुछ न कुछ सुना लिया। बापदादा जानते हैं कि स्नेह के कारण कैसे मेहनत कर आने के साधन जुटाते हैं। मेहनत के ऊपर बाप की मुहब्बत पदमगुणा बच्चों के साथ है। इसीलिए बाप भी स्नेह और गौल्डन विर्शन्स से सभी बच्चों का स्वागत कर रहे हैं। अच्छा–

सर्व चारों ओर के स्नेह में लवलीन बच्चों को, सर्व लगन में मगन रहने वाले मन के मीत बच्चों को, सदा एक बाप के गीत गाने वाले बच्चों को, सदा प्रीति की रीति निभाने वाले साथी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात – जर्मन ग्रुप से

सभी अपने को सदा श्रेष्ठ भाग्यवान, श्रेष्ठ आत्मायें समझते हो? सदा यह खुशी रहती है कि हम ऊंचे ते ऊंचे बाप के बच्चे हैं? क्योंकि जैसा बाप वैसे बच्चे हैं ना। बाप सदा खुशी का भण्डार है तो बच्चे भी बाप समान होंगे ना। कभी भूलना, कभी याद रहना, इससे जीवन का मजा नहीं आ सकता। जब एकरस स्थिति होतब जीवन में मजा है। कभी नीचे होंगे कभी ऊपर तो थक जायेंगे। वैसे भी किसको कहो बार-बार नीचे उतरो ऊपर चढ़ो तो थक जायेंगे ना। आप सब तो सदा बाप के साथ-साथ रहने वाले बाप समान आत्मायें हो ना! सेवा में सभी स्वयं से सन्तुष्ट हो? एक-दो से सन्तुष्ट हो? जो स्वयं से, सेवा से और सर्व से संतुष्ट हैं उनको बापदादा सदा सन्तुष्ट मणियां कहते हैं। ऐसी सन्तुष्ट मणियाँ सदा ताज में चमकती हैं। ताज की मणियाँ अर्थात् सदा ऊंची स्थति में स्थित रहने वाली। ऐसे ही अविनाशी भव। अच्छा–

इस क्लास में आप में से सबसे नालेजफुल, ज्ञानी तू आत्मा कौन है? (सभी) जैसा लक्ष्य होता है वैसा नम्बर आ ही जाता है। नम्ब-रवन का लक्ष्य है तो वह लक्षण आते रहेंगे। बापदाद तो सभी बच्चों को देख खुश होते हैं – कैसे लगन से बाप की याद और सेवा में लगे हुए हैं। एक-एक रत्न बाप के आगे सदा ही महान है। बिना बाप की याद और सेवा के सारे दिन में चैन आता है कि बस वही लगन लगी रहती है। रिजल्ट अच्छी है जर्मनी की। रत्न भी अच्छे-अच्छे हैं और सेवा में जगह-जगह विस्तार भी अच्छा किया है, इसको कहा जाता है बाप समान रहमदिल आत्मायें। अभी हिन्दी के अक्षर याद कर लो – थोड़ा-थोडा तो हिन्दी सीखेंगे ना। जब यहां थोड़े बहुत संस्कार डालेंगे तब तोसतयुग में भी बोल सकेंगे। वहाँ तो यह आपकी गिटपिट की भाषा होगी नहीं। हिन्दी न समझने कारण डायरेक्ट तो बाप का नहीं सुनते हो ना। अगर सीख जायेंगे तो डायरेक्ट सुनेंगे। बापदादा समझते हैं – बच्चे डायरेक्ट सुनें, डायरेक्ट सुनने से और मजा आयेगा। अच्छा – सेवा के लिए जितना भी आगे बढ़ो अतना बहुत अच्छा है। सर्विस के लिए किसी को मना नहीं है, जितने सेन्टर चाहो खोल सकत हो सिर्फ डायरेक्शन प्रमाण। उसमें सहज सफलता हो जाती है। अच्छा–

पौलैण्ड ग्रुप से:- बापदादा को खुशी है कि सभी बच्चे अपने स्वीट होम में पहुँच गये। आप सबको भी यह खुशी है ना कि हम ऐसे महान तीर्थ पर पहुँच गये। श्रेष्ठ जीवन तो अभ्यास करते-करते बन ही जायेगी लेकिन ऐसा श्रेष्ठ भाग्य पा लिया जो इस स्थान पर अपने सच्चे ईश्वरीय स्नेह वाली परिवार में पहुँच गये। इतना खर्च करके आये हो इतनी मेहनत से आये हो, अभी समझते हो कि खर्चा और मेहनत सफल हुई। ऐसे तो नहीं समझते हो पता नहीं कहाँ पहुँच गये! कितना परिवार के और बाप के प्यार हो। बापदादा सदा बच्चों की विशेषता को देखते हैं। आप लोग अपनी विशेषता को जानते हो? यह विशेषता तो हैं – जो लगन से इतना दूर से यहाँ पहुँचे। अभी सदा अपने ईश्वरीय परिवार को और इस ईश्वरीय विधि राजयोग को सदा साथ में रखते रहना। अभी वहां जाकर राजयोग केन्द्र अच्छी तरह से आगे बढ़ाना। क्योंकि कई ऐसी आत्मायें हैं जो सच्चे शान्ति, सच्चे प्रेम और सच्चे सुखकी प्यासी हैं। उन्हों को रास्ता तो बतायेंगे ना। वैसे भी कोई पानी का प्यासा हो, अगर समय पर कोई उसे पानी पिलाता है तो जीवन भर वह उसके गुण गाता रहता है। तो आप जन्म-जन्मान्तर के लिए आत्माओं के सुख-शानति की प्यास बुझाना, इससे पुण्य आत्मा बन जायेंगे। आपकी खुशी देखकर सब खुश हो जायेंगे। खुशी ही सेवा का साधन है।

इस महान तीर्थ स्थान पर पहुँचने से सभी तीर्थ इसमें समाये हुए हैं। इस महान तीर्थ पर ज्ञान स्नान करो और जो कुछ कम जोरी है उसका दान करो। तीर्थ पर कुछ छोड़ना भी होता है। क्या छोड़ेंगे? जिस बात में आप परेशान होते तो वही छोड़ना है। बस। तब महान तीर्थ सफल हो जाता है। यही दान करो और इसी दान से पुण्य आत्मा बन जायेंगे क्योंकि बुराई छोड़ना अर्थात् अच्छाई धारण करना। जब अवगुण छोड़ेंगे, गुण धारण करेंगे तो पुण्य आत्मा हो जायेंगे। यही है इस महान तीर्थ की सफलता। महान तीर्थ पर आये यह तो बहुत अच्छ – आना अर्थात् भाग्यवान की लिस्ट में हो जाना, इतनी शक्ति है इस महान तीर्थ की। लेकिन आगे क्या करना है। एक है भाग्यवान बनना दूसरा है सौभाग्यवान बनना और उसके आगे है पदमापदम भाग्यवान बनना। जितना संग करते रहेंगे,

गुणों की धारणा करते रहेंगे, उतना पदमापदम भाग्यवान बनते जायेंगे। अच्छा–

सेवाधारियों से:- यज्ञ सेवा का भाग्य मिलना यह भी बहुत बड़े भाग्य की निशानी है। चाहे भाषण नहीं करो, कोर्स नहीं कराओ लेकिन सेवा की मार्क्स तो मिलेंगी ना। इसमें भी पास हो जायेंगे। हर सब्जेक्ट की अपनी-अपनी मार्क्स है। ऐसे नहीं समझो कि हम भाषण नहीं कर सकते तो पीछे हैं। सेवाधारी सदा ही वर्तमान और भविष्य फल के अधिकारी हैं। खुशी होती है ना! माताओ को मन का नाचना आता है। और कुछ भी नहीं करो, सिर्फ खुशी में मन से नाचती रहो तो भी बहुत सेवा हो जायेगी। अच्छा– ओम् शान्ति।

3-3-84

## डबल विदेशी बच्चों से बापदादा की रुह-रुहान

मायाजीत, प्रकृतिजीत बनाने वाले बापदादा, स्वराजय अधिकारी बच्चों प्रति बोले:-

''आज बापदादा विशेष डबल विदेशी बच्चों से मिलने आये हैं। डबल विदेशी अर्थात् सदा स्वदेश, स्वीट होम का अनुभव करने वाले। सदा मैं स्वदेवी स्वीट होम का रहने वाला, परदेश में, पर-राज्य में स्वराज्य अर्थात् आत्मिक राजय और सुख का राज्य स्थापना करने गुप्त रुप से प्रकृति का आधार ले पार्ट बजाने के लिए आये हैं। हैं स्वदेशी, पार्ट परदेश में बजा रहे हैं। यह प्रकृति का देश है। स्वदेश आत्मा का देश है। अभी प्रकृति माया के वश में है। माया का राज्य है। इसलिए परदेश हो गया। यही प्रकृति आपके मायाजीत होने से आपकी सुखमय सेवाधारी बन जायेगी। मायाजीत, प्रकृतिजीत होने से अपना सुख का राज्य, सतोप्रधान राज्य, सुनहरी दुनिया बन जायेगी। यह स्पष्ट स्मृति आती है ना? सिर्फ सेकण्ड में चोला बदली करना है। पुराना छोड़ नया चोला धारण करना है। कितनी देर लगेगी? फरिश्ता सो देवता बनने में सिर्फ चोला बदली करने की देरी लगेगी। वाया स्वीट होम भी करेंगे लेकिन स्मृति अन्त में फरिश्ता सो देवता बने कि बने, यही रहेगी। देवताई शरीर की, देवताई जीवन की, देवताओं के दुनिया की, सतोप्रधान प्रकृति के समय की स्मृति रहती है? भरे हुए संस्कार अनेक बार के राज्य के, देवताई जीवन के इमर्ज होते हैं? क्योंकि जब तक आप होवनहार देवताओं के संस्कार इमर्ज नहीं होंगे तो साकार रुप में सुनहरी दुनिया इमर्ज कैसे होगी। आपके इमर्ज संकल्प से देवताई सृष्टि इस भूमि पर प्रत्यक्ष होगी। संकल्प स्वत: ही इमर्ज होता है या अभी समझते हो बहुत देरी है? देवताई शरीर आप देव आत्माओं का आह्वान कर रहे हैं। दिखाई दे रहे हैं अपने देवताई शरीर? कब धारण करेंगे? पुराने शरीर से दिल तो नहीं लग गई है? पुराना टाइट वस्त्र तो नहीं पहना हुआ है? पुराना शरीर, पुराना चोला पड़ा हुआ है जो समय पर सेकण्ड में छोड़ नहीं सकते। निर्बन्धन अर्थात् लूज ड्रेस पहनना। तो डबल विदेशियों को क्या पसन्द होता है – लूज वा टाइट? टाइट तो पसन्द नहीं है ना! बन्धन तो नहीं है?

अपने आप से एवररेडी हो! समय को छोड़ो, समय नहीं गिनती करो। अभी यह होना है, यह होना है वह समय जाने बाप जाने। सेवा जाने बाप जाने। स्व की सेवा से सन्तुष हो? विश्व सेवा को किनारे रखो, स्व को देखो। स्व की स्थिति में, स्व के स्वतन्त्र राज्य में, स्वयं से सन्तुष्ट हो? स्व की राजधानी ठीक चला सकते हो? यह सभी कर्मचारी, मंत्री, महामंत्री सभी आपके अधिकार में हैं? कहाँ अधीनता तो नहीं है? कभी आपके ही मंत्री, महामंत्री धोखा तो नहीं देते? कहाँ अन्दर ही अन्दर गुप्त अपने ही कर्मचारी माया के साथी तो नहीं बन जाते हैं? स्व के राज्य में आप राजाओं की रुलिंग पावर कन्ट्रोलिंग पावर यथार्थ रुप से कार्य कर रही है? ऐसे तो नहीं कि आर्डर करो शुभ संकल्प में चलना है और चलें व्यर्थ संकल्प। आर्डर करो सहनशीलता के गुण को और आवे हलचल का अवगुण। अभी शक्तियां, सभी गुण, हे स्व राजे, आपके आर्डर में हैं? यही तो आपके राज्य के साथी हैं। तो सभी आर्डर में हैं? जैसे राजे लोग आर्डर करते और सभी सेकण्ड में जी हजूर कर सलाम करते हैं, ऐसे कन्ट्रोलिंग पावर, रुलिंग पावर हैं? इसमें एव-ररेडी हो? स्व की कमजोरी, स्व का बन्धन धोखा तो नहीं देगा?

आज बापदादा स्वराज्य अधिकारियों से स्व के राज्य का हाल-चाल पूछ रहे हैं! जारे बैठे हो ना? प्रजा तो नहीं हो ना? किसी के अधीन अर्थात् प्रजा, अधिकारी अर्थात् राजा। तो सभी कौन हो? राजे। राजयोगी या प्रजा योगी? सभी राजाओं की दरबार लगी हुई है ना? सतयुग के राज्य सभा में तो भूल जायेंगे, एक दो को पहचानेंगे नहीं कि हम वहीं संगमयुगी हैं। अभी त्रिकालदर्शी बन एक दो को जानते हो, देखते हो। अभी का यह राज्य दरबार सतयुग से भी श्रेष्ठ है। ऐसी राज्य दरबार सिर्फ संगमयुग पर ही लगती है। तो सबके राज्य का हालचाल ठीक है ना? बड़े आवाज से नहीं बोला कि ठीक है!

बापदादा को भी यह राज्य सभा प्रिय लगती है। फिर भी रोज़ चेक करना, अपनी राज्य दरबार रोज लगाकर देखना अगर कोई भी कर्मचारी थोड़ा भी अलबेला बने तो क्या करेंगे? छोड़ देंगे उसको? आप सबने शुरु के चरित्र सुने हैं ना! अगर कोई छोटे बच्चे चंचलता करते थे, तो उनको क्या सजा देते थे? उसका खाना बन्द कर देना या रस्सी से बांध देना यह तो कामन बात है लेकिन उसको एकान्त में बैठने की ज्यादा घण्टा बैठने की सजा देते थे। बच्चे हैं ना, बच्चे तो बैठ नहीं सकते। तो एक ही स्थान पर बिना हलचल के ४-५ घण्टा बैठना उसकी कितनी सजा है। तो ऐसी रायल सजा देते थे। तो यहाँ भी कोई कर्मेन्द्रिय ऐसे वैसे करे तो

अन्तर्मुखता की भट्ठी में उसको बिठा दो। बाहरमुखता में आना ही नहीं है, यही उसको सजा दो। आये फिर अन्दर कर दो। बच्चे भी करते हैं ना। बच्चों को बिठाओ फिर ऐस करते हैं, फिर बिठा देते हैं। तो ऐसे बाहरमुखता से अन्तर्मुखता की आदत पड़ जायेगी। जैसे छोटे बच्चों की आदत डालते हैं ना – बैठो, याद करो। वह आसन नहीं लगायेंगे फिर-फिर आप लगाकर बिठायेंगे। कितनी भी वह टाँगे हिलावे तो भी उसको कहेंगे नहीं, ऐसे बैठो। ऐसे ही अन्तर्मुखता के अभ्यास की भट्ठी में अच्छी तरह से दृढ़ता के संकल्प से बाँधकर बिठा दो। और रस्सी नहीं बाँधनी हैं लेकिन दृढ़ संकल्प की रस्सी, अन्तर्मुखता के अभ्यास की भट्ठी में बिठा दो। अपने आपको ही सजा दो। दूसरा देगा तो फिर क्या होगा? दूसरे अगर आपको कहें यह आपके कर्मचारी ठीक नहीं हैं, इसको सजा दो। तो क्या करेंगे? थोड़ा-सा आयेगा ना - यह क्यों कहता! लेकिन अपने आपको देंगे तो सदाकाल रहेंगे। दूसरे के कहने से सदाकाल नहीं होगा। दूसरे के इशारे को भी जब तक अपना नहीं बनाया है तब तक सदाकाल नहीं होता समझा!

राजे लोग कैसे हों? राज्य दरबार अच्छी लग रही है ना! सब बड़े राजे हो ना! छोटे राजे तो नहीं, बड़े राजे। अच्छा-

आज ब्रह्मा बाप खास डबल विदेशियों को देख रुह-रुहान कर रहे थे। वह फिर सुनायेंगे। अच्छा- सदा मायाजीत, प्रकृतिजीत, राज्य अधिकारी आत्मायें, गुणों और सर्व शक्तियों के खजानों को अपने अधिकार से कार्य में लगाने वाले, सदा स्व्राज्य द्वारा सर्व कर्म-चारियों को सदा के स्नही साथी बनाने वाले, सदा निर्बन्धन, एवररेडी रहने वाले, सन्तुष्ट आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

आस्ट्रेलिया ग्रुप से:- सदा याद और सेवा का बैलेन्स रखने वाले बापदादा और सर्व आत्माओं द्वारा ब्लैसिंग लेने वाली आत्मायें हो ना! यही ब्राह्मण जीवन की विशेषता है जो सदा पुरुषार्थ के साथ-साथ ब्लैसिंग लेते हुए बढ़ते रहें। ब्राह्मण जीवन में यह ब्लैसिंग एक लिफ्ट का काम करती है। इस द्वारा उड़ती कला का अनुभव करते रहेंगे।

आस्ट्रेलिया निवासियों से बापदादा का विशेष स्नेह हैं क्यो? क्योंकि सदा एक अनेकों को लाने की हिम्मत और उमंग में रहते हैं। यह विशेषता बाप को भी प्रिय है। क्योंकि बाप का भी कार्य है ज्यादा से ज्यादा आत्माओं को वर्से का अधिकारी बनाना। तो फालो फादर करने वाले बच्चे विशेष प्रिय होते हैं ना। आने से ही उमंग अच्छा रहता है। यह एक आस्ट्रेलिया की धरनी को जैसे वरदान मिला हुआ है। एक अनेकों के निमित्त बन जाता है। बापदादा तो हर बच्चे के गुणों की माला सिमरण करते रहते हैं। आस्ट्रेलिया की विशेषता भी बहुत है लेकिन आस्ट्रेलिया वाले माया को भी थोड़ा ज्यादा प्रिय हैं। जो बाप को प्रिय होते हैं, वह माया को भी प्रिय हो जाते हैं। कितने अच्छे-अच्छे थोड़े समय के लिए ही सही लेकिन माया के बन तो गये हैं ना। आप सब तो ऐसे कच्चे नहीं हो ना! कोई चक्र में आने वाले तो नहीं हो? बापदादा को अभी भी वह बच्चे याद हैं। सिर्फ क्या होता है किसी भी बात को पूरा न समझने के कारण क्यों और क्या में आ जाते हैं तो माया के आने का दरवाजा खुल जाता है। आप तो माया के दरवाजे को जान गये हो ना। तो न क्यों क्या में जाओ और न माया के आने का चांस मिले। सदा डबल लाक लगा रहे। याद और सेवा ही डबल लाक है। सिर्फ सेवा सिंगल लाक है। सिर्फ याद, सेवा नहीं तो भी सिंगल लाक है। दोनों का बैलेन्स यह है डबल लाक। बापदादा की टी.वी. में आपका फोटो निकल रहा है, फिर बापदादा दिखायेंगे देखो इस फोटो में आप हो। अच्छ्ज्ञ- फिर भी संख्या में हिम्मत से, निश्चय से अच्छा नम्बर है। बाप को ज्यादा प्रिय लगते हो इसलिए माया से बचने की युक्ति सुनाई अच्छा–

5-3-84

## शान्ति की शक्ति का महत्व

शान्ति के सागर शिवबाबा शान्ति स्वरुप बच्चों के प्रति बोले:-

''शान्ति के सागर बाप अपने शान्ति के अवतार बच्चों से मिलने आये हैं। आज के संसार में सबसे आवश्यक चीज शानति है। उसी शानति के दाता तुम बच्चे हो। कितना भी कोई विनाशी धन, विनाशी साधन द्वारा शान्ति लेने चाले तो सच्ची अविनाशी शान्ति मिल नहीं सकती। आज का संसार धनवान होते, सुख के साधन होते फिर भी अविनाशी सदाकाल की शान्ति के भिखारी हैं। ऐसे शान्ति की भिखारी आत्माओं को आप मास्टर शान्ति दाता, शान्ति के भण्डार शान्ति स्वरुप आत्मायें अंचली दे सर्व की शान्ति की प्यास, शान्ति की इच्छा पूर्ण करो। बापदादा को अशान्त बच्चों को देख रहम आता है। इतना प्रयत्न कर साइन्स की शक्ति से कहाँ से कहाँ पहुँच रहे हैं, क्या क्या बना रहे हैं, दिन को रात भी बना सकते, रात को दिन भी बना सकते लेकिन अपनी आत्मा का स्वधर्म शान्ति, उसको प्राप्त नहीं कर सकते। जितना ही शान्ति की पीछे भाग-दौड करते हैं उतना ही अल्पकाल की शान्ति के बाद परिणाम अशान्ति ही मिलती है। अविनाशी शान्ति सर्व आत्माओं का ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार है। लेकिन जन्म-सिद्ध अधिकार के पीछे कितनी मेहनत करते हैं। सेकण्ड की प्राप्ति है लेकिन सेकण्ड की प्राप्ति के पीछे पूरा परिचय न होने कारण कितने धक्के खाते हैं, पुकारते हैं, चिल्लाते हैं, परेशान होते हैं। ऐसे शान्ति के पीछे भटकने वाले अपने आत्मिक रुप के भाईयों को, भाई-भाई की दृष्टि दो। इसी दृष्टि से ही उन्हों की सृष्टि बदल जायेगी।

आप सभी शान्ति के अवतार आत्मायें सदा शान्ति स्वरुप स्थिति में रहते हो ना? अशान्ति को सदा के लिए विदाई दे दी है ना! अशान्ति की विदाई सेरीमनी कर ली है या अभी करनी है? जिसने अभी अशानति की विदाई सेरीमनी नहीं की है, अभी करनी है वह यहाँ है? उनकी डेट फिक्स कर दें? जिसको अभी सेरीमनी करनी है वह हाथ उठाओ। कभी स्वप्न में भी अशान्ति न आवे। स्वप्न भी शान्तिमन हो गये हैं ना! शान्ति दाता बाप है, शान्ति स्वरुप आप हो। धर्म भी शान्त, कर्म भी शान्त तो अशान्ति कहाँ से आयेगी। आप सबका कर्म क्या है? शान्ति देना। अभी भी आप सबके भक्त लोग आरती करते हैं तो क्या कहते हैं? शान्ति देवा। तो यह किसकी आरती करते हैं? आपकी या सिर्फ बाप की? शान्ति देवा बच्चे सदा शान्ति के महादानी वरदानी आत्मायें हैं। शान्ति की किरणें विश्व में मास्टर ज्ञान सूर्य बन फैलाने वाले हैं, यही नशा है ना कि बाप के साथ-साथ हम भी मास्टर ज्ञान सूर्य हैं वा शान्ति की किरणें फैलाने वाले मास्टर सूर्य हैं।

सेकण्ड में स्वधर्म का परिचय दे स्व स्वरुप में स्थित करा सकते हो ना? अपनी वृत्ति द्वारा, कौन-सी वृत्ति? इस आत्मा को भी अर्थात् हमारे इस भाई को भी बाप का वर्सा मिल जाए। इस शुभ वृत्ति वा इस शुभ भावना से अनेक आत्माओं को अनुभव करा सकते हो, क्यों? भावना का फल अवश्य मिलता है। आप सबको श्रेष्ठ भावना है, स्वार्थ रहित भावना है। रहम की भावना है। कल्याण की भावना है। ऐसी भावना का फल नहीं मिले यह हो नहीं सकता। जब बीज शक्तिशाली है तो फल जरुर मिलता है। सिर्फ इस श्रेष्ठ भावना के बीज को सदा स्मृति का पानी देते रहो तो समर्थ फल, प्रत्यक्ष फल के रुप में अवश्य प्राप्त होना ही है। क्वेश्चन नहीं, होगया या नहीं होगा। सदा समर्थ स्मृति का पानी है अर्था सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना है तो विश्व शान्ति का प्रत्यक्षफल मिलना ही है। सर्व आत्माओं की जन्म-जन्म की आश बाप के साथ-साथ सभी बच्चे भी पूर्ण कर रहे हो और सर्व की हो जानी है।

जैसे अभी अशान्ति के आवाज चारों ओर गूँज रहे हैं। तन-मन-धन-जन सब तरफ से अशान्ति अनुभव कर रहे हैं। भय सर्व प्राप्ति के साधनों को भी शान्ति के बजाए अशान्ति का अनुभव करा रहा है। आज की आत्मायें किसी न किसी भय के वशीभूत हैं। खा रहे हैं, चल रहे हैं, कमा रहे हैं, अल्पकाल की मौज भी मना रहे हैं लेकिन भय के साथ। ना मालूम कल क्या होगा। तो जहाँ भय का सिंहासन है, जब नेता ही भय की कुर्सी पर बैठे हैं तो प्रजा क्या होगी। जितने बड़े नेता उतने अंगरक्षक होंगे। क्यों? भय है ना। तो भय के सिंहसान पर अल्पकाल की मौज क्या होगी? शान्तिमय वा अशान्तिमय? बापदादा ने ऐसे भयभीत बच्चों को सदाकाल की सुखमय, शान्तिमय जीवन देने के लिए आप सभी बच्चों को शानति के अवतार के रुप में निमित्त् बनाया है। शान्ति की शक्ति से बिना खर्चे कहाँ से कहाँ तक पहुँच सकते हो? इस लोक से भी परे। अपने स्वीट होम में कतना सहज पहुँचते हो! मेहनत लगती है? शान्ति की शक्ति से प्रकृतिजीत मायाजीत कितना सहज बनते हो? किस द्वारा? आत्मिक शक्ति द्वारा। जब एटामिक और आत्मिक दोनों शक्तियों का जब मेल हो जायेगा। आत्मिक शक्ति से एटामिक शक्ति भी सतोप्रधान बुद्धि द्वारा सुख के कार्य में लगेगी तब दोनों शक्तियों के मिलन द्वारा शान्तिमय दुनिया इस भूमि पर प्रत्यक्ष होगी। क्योंकि शान्ति, सुखमय स्वर्ग के राज्य में दोनों शक्तियाँ है। तो सतोप्रधान बुद्धि अर्थात् सदा श्रेष्ठ, सत्य कर्म करने वाली बुद्धि। सत अर्था अविनाशी भी है। हर कर्म, अविनाशी बाप, अविनाशी आत्मा इस स्मृति से अविनाशी प्रापति वाला होगा। इसलिए कहते हैं सत कर्म। तो ऐसे सदा के लिए शान्ति देने वाले, शान्ति के अवतार हो। समझा। अच्छा–

ऐसे सदा सतोप्रधान स्थिति द्वारा, सत कर्म करने वाली आत्मायें, सदा अपने शक्तिशाली भावना द्वारा अनेक आत्माओं को शान्ति का फल देने वाली, सदा मास्टर दाता बन, शान्ति देवा बन शान्ति की किरणें विश्व में फैलाने वाली, ऐसे बाप के विशेष कार्य के सहयोगी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

लन्दन के नोबिल विजेता वैज्ञानिक जोसिफसन बापदादा से मिल रहे हैं

शान्ति की शक्ति के अनुभव को भी अनुभव करते हो? क्योंकि शान्ति की शक्ति सारे विश्व को शान्तिमय बनाने वाली है। आप भी शान्तिप्रिय आत्मा हो ना! शान्ति की शक्ति द्वारा साइन्स की शक्ति को भी यथार्थ रुप से कार्य में लगाने से विश्व का कल्याण करने के निमित्त बन सकते हो। साइन्स की शक्ति भी आवश्यक है लेकिन सिर्फ सतोप्रधान बुद्धि बनने से इसका यथार्थ रुप से प्रयोग कर सकते हैं। आप सिर्फ इसी नालेज की कमी है कि यथार्थ रीति से इसको कार्य में कैसे लगायें। यही साइन्स इस नालेज के आधार पर नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त बनेगी। लेकिन आप वह नालेज न होने कारण विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। तो अभी इसी साइन्स की शक्ति को साइलेन्स की शक्ति के आधार से बहुत ही अच्छे कार्य में लगाने के निमित्त बनो। इसमें भी नोबिल प्राइज लेंगे ना! क्योंकि आवश्यकता इसी कार्य की है। तो जब जिस कार्य की आवश्यकता है उसमें निमित्त बनने वाले को सभी श्रेष्ठ आत्मा की नजर से देखेंगे। तो समझा क्या करना है! अभी साइन्स और साइलेन्स का कनेक्शन कैसा है और दोनों के कनेक्शन से कितनी सफलता हो सकती है इसकी रिसर्च करो। रिसर्च की रुचि है ना! अभी यह करना। इतना बड़ा कार्य करना है।

ऐसी दुनिया बनायेंगे ना। अच्छा–

यू.के.ग्रुप:- सिकीलधे बच्चे सदा ही बाप से मिले हुए हैं। सदा बाप साथ है, यह अनुभव सदा रहता है ना? अगर बाप के साथ से थोड़ा भी किनारा किया तो माया की ऑख बड़ी तेज है। वह देख लेती है यह थोड़ा-सा किनारे हुआ है तो अपना बना लेती है। इसलिए किनारे कभी भी नहीं होना। सदा साथ। जब बापदादा स्वयं सदा साथ रहने की आफर कर रहे हैं तो साथ लेना चाहिए ना। ऐसे साथ सारे कल्प में कभी नहीं मिलेगा, जो बाप आकर कहे मेरे साथ रहो। ऐसे भाग्य सतयुग में भी नहीं होगा। सतयुग में भी आत्माओं के संग रहेंगे। सारे कल्प में बाप का साथ कितना समय मिलता है? बहुत थोड़ा समय है ना। तो थोड़े समय में इतना बड़ा भाग्य मिले तो सदा रहना चाहिए ना। बापदादा सदा परिपक्व स्थिति में स्थित रहने वाले बच्चों को देख रहे हैं। कितने प्यारे-प्यारे बच्चे बापदादा के सामने हैं। एक-एक बच्चे बहुत लवली है। बापदादा ने इतने प्यार से सभी को कहाँ-कहाँ से चुनकर इकट्ठा किया है। ऐसे चुने हुए बच्चे सदा ही पक्के होंगे, कच्चे नहीं हो सकते। अच्छा–

7-3-84

## कर्मातीत, वनाप्रस्थी आत्मायें ही तीव्रगति की सेवा के निमित्त

वानप्रस्थी, कर्मातीत स्थिति में स्थित करने वाले सदा कर्मातीत शिवबाबा बोले:-

''मधुबन वरदान भूमि, समर्थ भूमि, श्रेष्ठ संग की भूमि, सहज परिवर्तन भूमि, सर्व प्राप्तियों के अनुभव कराने वाली भूमि है। ऐसी भूमि पर आकर सभी स्वयं को सम्पन्न अर्थात् सब बातों से भरपूर अनुभव करते हो? कोई अप्राप्ति तो नहीं है? जो सर्व खजाने मिले हैं उन्हों को सदाकाल के लिए धारण किया है? ऐसे समझते हो कि यहाँ से सेवा स्थान पर जाकर महादानी बन यही शक्तियाँ, सर्व प्राप्तियाँ सर्व को देने के निमित्त बनेंगे? सदा के लिए स्वयं को विघ्न विनाशक, समाधान स्वरुप अनुभव किया है? स्व की समस्या तो अगल रही लेकिन अन्य आत्माओं के समस्याओं का भी समाधान स्वरुप।

समय के प्रमाण अब ब्राह्मण आत्मायें समस्याओं के वश हो जाएं इससे अभी पार हो गये। समस्याओं के वश होना यह बाल अवस्था है। अब ब्राह्मण आत्माओं की बाल अवस्था का समय समाप्त हो चुका। युवा अवस्था में मायाजीत बनने की विध से महावरी बने, सेवा में चक्रवर्ती बने। अनेक आत्माओं के वरदानी महादानी बने, अनेकर प्रकार के अनुभव कर महारथी बने अब कर्मातीत वानप्रस्थ स्थिति में जाने का समय पहुँच गया है। कर्मातीत वानप्रस्थ स्थिति द्वारा ही विश्व की सर्व आत्माओं को आधाकल्प के लिए कर्म बन्धनों से मुक्त कराए मुक्ति में भेजेंगे। मुक्त आत्मायें ही सेकण्ड में मुक्ति का वर्सा बाप से दिला सकती हैं। मैजारिटी आत्मायें मुक्ति की भीख मांगने के लिए आप कर्मातीत वानप्रस्थ महादानी वरदानी बच्चों के पास आयेंगी। जैसे अभी आपके जड़ चित्रों के आगे, कोई मन्दिरों में जाकर प्रार्थना कर सुख शान्ति मांगते हैं। कोई तीर्थ स्थानों पर जाकर मांगते हैं। कोई घर बैठे मांगते हैं। जिसकी जहां तक शक्ति होती वहां तक पहुँयचते हैं, लेकिन यथाशक्ति यथाफल की प्राप्ति करते हैं। कोई दूरे बैठे भी दिल से करते हैं और कोई मूर्ति के सामने तीर्थ स्थान वा मन्दिरों में जाकर भी दिखावे मात्र करते हैं। स्वार्थ वश करते हैं। उन सब हिसाब अनुसार जैसा कर्म जैसी भावना वैसे फल मिलता है। ऐसे अब समय प्रमाण आप चैतन्य महादानी वरदानी मूर्तियों के आगे प्रार्थना करेंगे। कोई सेवा स्थान रुपी मन्दिरों में पहुँचेंगे। कोई महान तीर्थ मधुबन तक पहुँचेंगे। और कोई घर बैठे साक्षात्कार करते दिव्य बुद्धि द्वारा प्रत्यक्षता का अनुभव करेंगे। सम्मुख न आते भी स्नेह और दृढ़ संकल्प से प्रार्थना करेंगे। मंसा में आप चैतन्य फरिश्तों का आह्वान कर मुक्ति से वर्से की अंचली मांगेंगे। थोड़े समय में सर्व आत्माओं को वर्सा दिलाने का कार्य तीव्रगति से करना होगा। जैसे विनाश के साधन रिफाइन होने के कारण तीव्रगति से समाप्ति के निमित्त बनेंगे ऐसे आप वरदानी महादानी आत्मायें अपने कर्मातीत फरिश्ते स्वरुप के सम्पूर्ण शक्तिशाली स्वरुप द्वारा सर्व की प्रार्थना का रेसपान्ड मुक्ति का वर्सा दिलायेंगी। तीव्रगति के इस कार्य के लिए मास्टर सर्व शक्तिवान, शक्तियों के भण्डार, ज्ञान के भण्डार, याद स्वरुप तैयार हो? विनाश की मिशनरी और वरदान की मशीनरी दोनों तीव्रगति के साथ-साथ चलेंगी।

बहुतकाल से अर्थात् अब से भी एवररेडी। तीव्रगति वाले कर्मातीत, समाधान स्वरुप सदा रहने का अभ्यास नहीं करेंगे तो तीव्रगति के समय देने वाले बनने के बजाए देखने वाले बनना पड़े। तीव्र पुरुषार्थी बहुत काल वाले तीव्रगति की सेवा निमित्त बन सकेंगे। यह है वानप्रस्थ अर्थात् सर्व बन्धनमुक्त न्यारे और बाप के साथ-साथ तीव्रगति के सेवा की प्यारी अवस्था। तो अब देने वाले बनने का समय है ना कि अब भी स्वयं प्रति, समरुयाओं प्रति लेने वाले बनने का समय है। स्व की समस्याओं में उगमग होना अब वह समय गया। समस्या भी एक अपनी कमजोरी की रचना है। कोई द्वारा वा कोई सरकमस्टांस द्वारा आई हुई समस्या वास्तव में अपनी कमजोरी का ही कारण है। जहां कमजोरी है वहां व्यक्ति द्वारा वा सरकमस्टांस द्वारा समस्या वा करती है। अगर कमजोरी नहीं तो समस्या का वार नहीं। आई हुई समस्या, समस्या के बजाए समाधान रुप में अनुभवी बनायेगी। यह अपनी कमजोरी के उत्पन्न हुए मिक्की माउस हैं। अभी तो सब हंस रहे हैं और जिस समय आती है उस समय क्या करते हैं? खुद भी मिक्की माउस बन जाते हैं।

इससे खेलो न कि घबराओ। लेकिन यह भी बचपन का खेल हैं। न रचना करो न समय गंवाओ। इससे परे स्थिति में वानप्रस्थी बन जाओ। समझा!

समय क्या कहता? बाप क्या कहता? अब भी खिलौनों से खेलना अच्छा लगता है क्या? जेसे कलियुग की मानव रचना भी क्या बन गई है? मुरली में सुनते हो ना। बिच्छु टिण्डन हो गये हैं। तो यह कमजोर समस्याओं कीर रचना भी बिच्छू टिण्डन के समान स्वयं को काटते हैं। शक्तिहीन बना देते हैं। इसलिए सभी मधुबन से सम्पन्न बन यह दृढ़ संकल्प करके जाना कि अब से स्वयं की समस्या को समाप्त किया ही लेकिन और किस के लिए भी समस्या स्वरुप नहीं बनेंगे। स्व प्रति, सर्व के प्रति सदा समाधान स्वरुप रहेंगे। समझा!

इतना खर्चा करके मेहनत करके आते हो तो। मेहनत का फल इस दृढ़ संकल्प द्वारा सहज सदा मिलता रहेगा। जैसे मुख्य बाप पवित्रता के लिए दृढ़ संकल्प किया है ना कि मर जायेंगे, सहज करेंगे लेकिन इस व्रत को कायम रखेंगे। स्वप्न में वा संकल्प में भी अगर जरा भी हलचल होती है तो बाप समझते हो ना। ऐसे समस्या बनना या समस्या के वा हो जाना यह भी बाप का खाता है। पाप की परिभाषा है, पहचान है, जहां पाप होगा वहां बाप याद नहीं होगा, साथ नहीं होगा। पाप और बाप, दिन और रात जैसे हैं। तो जब समस्या आती है उस समय बाप याद आता है? किनारा हो जाता है ना? फिर जब परेशान होते हो तब बाप याद आता है। और वह भी भक्त के रुप में याद करते। अधिकारी के रुप में नहीं। शक्ति दे दो, सहारा दे दो। पार लगा दो। अधिकारी के रुप में, साथी के रुप में, समान बान के रुप में याद नहीं करते हो। तो समझा अब कया करना है। समाप्ति समारोह मनाना है ना। समस्याओं का समाप्ति समारोह मनायेंगे ना! यह सिर्फ डान्स करेंगे? अच्छे-अच्छे ड्रामा करते हो ना! अभी यह फंक्शन करना क्योंकि अभी सेवा में समय बहुत चाहिए। वहां पुकार रहे हैं और यहां हिल रहे हैं, यह तो अच्छा नहीं है ना! वह वरदानी महादानी कह याद कर रहे हैं और आप मूड आफ में रो रहे हैं तो फल कैसे देंगे! उनके पास भी आपके गर्म आंसू पहुँच जायेंगे। वह भी घबराते रहेंगे। अभी याद रखो कि हम ब्रह्मा बाप के साथ-इष्ट देव पूज्य आत्मायें हैं। अच्छा-

सदा बहुत काल के तीव्र पुरुषार्थी, तीव्रगति की सेवा के एवररेडी बच्चों को सदा विश्व परिवर्तन सो समस्या परिवर्तक, समाधान स्वरुप बच्चें को, सदा रहमदिल बन भक्त आत्माओं और ब्राह्मण आत्माओं के स्नेही और सहयोगी रहने वाली श्रेष्ठ आत्मायें, सदा समस्याओं से परे रहने वाले, कर्मातीत वानप्रस्थ स्थिति में रहने वाले सम्पन्न स्वरुप बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

न्यूयार्क पार्टी से:- सभी अपने को बाप की विशेष आत्मायें अनुभव करते हो? सदा यही खुशी रहती है कि जैसे बाप सदा श्रेष्ठ है वैसे हम बच्चे भी बाप समान श्रेष्ठ हैं? इसी स्मृति से सदा हर कर्म स्वत: ही श्रेष्ठ हो जायेगा। जैसा संकल्प होगा वैसे कर्म होंगे। तो सदा स्मृति द्वारा श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रहने वाली विशेष आत्मायें हो। सदा अपने इस श्रेष्ठ जन्म की खुशियां मनाते रहो। ऐसा श्रेष्ठ जन्म जो भगवान के बच्चे बन जायें – ऐसा सारे कल्प में नहीं होता। पांच हजार वर्ष के अन्दर सिर्फ इस समय यह अलौकिक जन्म होता है। सतयुग में भी आत्माओं के परिवार में आयेंगे लेकिन अब परमात्म सन्तान हो। तो इसी विशेषता को सदा याद रखो। सदा मैं ब्राह्मण ऊंचे ते ऊंचे धर्म, कर्म और परिवार का हूँ। इसी स्मृति द्वारा हर कदम में आगे बढ़ते चलो। पुरुषार्थ की गति सदा तेज हो। उड़ती कला सदा ही मायाजीत और निर्बन्धन बना देगी। जब बाप को अपना बना दिया तो और रहा ही क्या। एक रह गया था। एक में ही सब समाया हुआ है। एक की याद में, एकरस स्थिति में स्थित होने से शान्ति, शक्ति और सुख की अनुभूति होती रहेगी। जहाँ एक है वहाँ एक नम्बर है। तो सभी नम्बरवन हो ना। एक को याद करना सहज है या बहुतों को? बाप सिर्फ यही अभ्यास कराते हैं और कुछ नहीं। दस चीजें उठाना सहज है या एक चीज उठाना सहज है? तो बुद्धि द्वारा एक की याद धारण करना बहुत सहज है। लक्ष्य सबका बहुत अच्छा है। लक्ष्य अच्छा है तो लक्षण अच्छे होते ही जायेंगे। अच्छा! ओम् शान्ति।

9-3-84

## परिवर्तन को अविनाशी बनाओ

शक्तिशाली स्थिति में स्थित करने वाले सर्वशक्तिवान शिवबाबा बोले:-

''बापदादा सभी चात्रक बच्चों को देख रहे हैं। सभी को सुनना, मिलना और बनना यही लगन है। सुनना, इसमें नम्बरवन चात्रक हैं। मिलना इसमें नम्बर हैं और बनना – इसमें यथा शक्ति तथा समान बनना। लेकिन सभी श्रेष्ठ आत्मायें, ब्राह्मण आत्मायें तीनों के चात्रक जरुर हैं। नम्बरवन चात्रक मास्टर मुरलीधर, मास्टर सर्वशक्तिवान बाप समान सदा और सहज बन जाते हैं। सुनना अर्थात्, मुरलीधर बनना। मिलना अर्थात् संग के रंग में उसी समान शक्तियों और गुणों में रंग जाना। बनना अर्थात् संकल्प के कदम पर, बोल के कदम पर, कर्म के कदम पर कदम रखते हुए साक्षात बाप समान बनना। बच्चे के संकल्प में बाप का संकल्प समान अनुभव हो। बोल में, कर्म में जैसा बाप वैसा बच्चा सर्व को अनुभव हो। इसको कहा जाता है समान बनना वा नम्बरवन चात्रक। तीनों में से चेक करो मैं कौन हूँ। सभी बच्चों के उमंग उत्साह भरे संकल्प बापदादा के पास पहुँचते हैं। संकल्प बहुत अच्छे हिम्मत और

दृढ़ता से करते हैं। संकल्प रुपी बीज शक्तिशाली है लेकिन धारणा की धरनी, ज्ञान का गंगाजल और याद की धूप कहो वा गर्मी कहो, बार-बार स्व अटेन्शन की रेख देख इसमें कहाँ-कहाँ अलबेले बन जाते हैं। एक भी बात में कभी होने से संकल्प रुपी बीज सदा फल नहीं देता है। थोड़े समय के लिए एक सीजन, दो सीजन फल देगा। सदा का फल नहीं देगा। फिर सोचते हैं बीज तो शक्तिशाली था, प्रतिज्ञा तो पक्की की थी। स्पष्ट भी हो गया था। फिर पता नहीं क्या हो गया। ६ मास तो बहुत उमंग रहा फिर चलते-चलते पता नहीं क्या हुआ। इसके लिए जो पहले बातें सुनाई उस पर सदा अटेन्शन रहे।

दूसरी बात – छोटी-सी बात में घबराते जल्दी हो। घबराने के कारण छोटी-सी बात को भी बड़ा बना देते हो। होती चींटी है उसको बना देते हो हाथी। इसलिए बैलेन्स नहीं रहता। बैलेन्स न होने के कारण जीवन से भारी हो जाते हो। या तो नशे में बिल्कुल ऊंचे चढ़ जाते वा छोटी-सी कंकडी भी नीचे बिठा देती। नालेजफुन बन सेकण्ड में उसको हटाने के बजाए कंकड़ी आ गई, रुक गबये, नीचे आ गये, यह हो गया, इसको सोचने लग जाते हो। बीमार हो गया, बुखार वा दर्द आ गया। अगर यही सोचते और कहते रहें तो क्या हाल होगा! ऐसे जो छोटी-छोटी बातें आती हैं उनको मिटाओ, हटाओ और उड़ो। हो गया, आ गया इसी संकल्प में कमजोर नहीं बनो। दवाई लो और तन्दरुस्त बनो। कभी-कभी बापदादा बच्चों के चेहरे को देख सोचते हैं अभी-अभी क्या थे, अभी-अभी क्या हो गये! यह वही ही हैं या दूसरे बन गये! जल्दी में नीचे ऊपर होने से क्या होता? माथा भारी हो जाता। वैसे भी स्थूल में अभी ऊपर अभी नीचे आओ तो चक्र महसूस करेंगे ना। तो यह संस्कार परिवर्तन करो। ऐसे नहीं सोचो की हम लोगों की आदत ही ऐसी है। देश के कारण वा वायुमण्डल के कारण वा जन्म के संस्कार, नेचर के कारण ऐसा होता ही है, ऐसी-एसी मान्यतायें कमजोर बना देती हैं। जन्म बदला तो संस्कार भी बदलो। जब विश्व परिवर्तन हो तो स्व परिवर्तक तो पहले ही हो ना। अपने आदि अनादि स्वभाव संस्कार को जानो। असली संस्कार वह हैं। यह तो नकली हैं। मेरे संस्कार, मेरी नेचर यह माया के वशीभूत होने की नेचर है। आप श्रेष्ठ आत्माओं की आदि अनादि नेचर नहीं है। इसलिए इन बातों पर फिर से अटेन्शन दिला रहे हैं। रिवाइज करा रहे हैं। इस परिवर्तन को अविनाशी बनाओ।

विशेषतायें भी बहुत हैं। स्नेह में नम्बरवन हो, सेवा के उमंग में नम्बरवन हो। स्थूल में दूर होते भी समीप हो। कैचिंग पावर भी बहुत अच्छी है। महसूसता की शक्ति भी बहुत तीव्र है। खुशियों के झूलें में भी झूलते हो। वाह बाबा, वाह परिवार, वाह ड्रामा के गीत भी अच्छे गाते हो। दृढ़ता की विशेषता भी अच्छी है। पहचानने की बुद्धि भी तीव्र है। बाप और परिवार के सिकीलधे लाडले भी बहुत हो। मधुबन के श्रृंगार हो और रौनक भी अच्छी हो। वैरायटी डालियां मिलकर एक चन्दन का वृक्ष बनने का एग्जैम्पल भी बहुत अच्छे हो। कितनी विशेषतायें हैं! विशेषतायें ज्याद हैं और कमजोरी एक है। तो एक को मिटाना तो बहुत सहज है ना। समस्यायें समाप्त हो गई हैं ना! समझा–

जैसे सफाई से सुनाते हो वैसे दिल से सफाई से निकालने में भी नम्बवर वन हो। विशेषताओं की माला बनायेंगे तो लम्बी चौड़ी हो जायेगी। फिर भी बापदादा मुबारक देते हैं। यह परिवर्तन ९९ प्रतिशत तो कर लिया बाकी १ प्रतिशत है। वह भी परिवर्तन हुआ ही पड़ा है। समझा। कितने अच्छे हैं जो अभी-अभी भी बदल करके ना से हाँ कर देते हैं। यह भी विशेषता हैं ना! उत्तर बहुत अच्छा देते हैं। इन्हों से पूछते हैं शक्तिशाली, विजयी हो? तो कहते हैं अभी से हैं! यह भी परिवर्तन की शक्ति तीव्र हुई ना। सिर्फ चींटी चूहे से घबराने का संस्कार है। महावीर बन चींटी को पांव के नीचे कर दो और चूहे की सवारी बना दो, गणेश बन जाओ। अभी से विघ्न विनाशक अर्थात् गणेश बनकर चूहे पर सवारी करने लग जाना। चूहे से डरना नहीं। चूहा शक्तियों को काट लेता है। सहन शक्ति खत्म कर लेता है। सरलता खत्म कर देता है। स्नेह खत्म कर देता। काटता है ना। और चींटी सीधे माथे में चली जाती है। टेन्शन में बेहोश कर देती है। उस समय परेशान कर लेती है ना। अच्छा!

सदा महावीर बन शक्तिशाली स्थिति में स्थित होने वाले, हर संकल्प, बोल और कर्म, हर कदम पर कदम रख बाप के साथ-साथ चलने वाले सच्चे जीवन के साथी, सदा अपनी विशेषताओं को सामने रख कमजोरी को सदा के लिए विदाई देने वाले, संकल्प रुपी बीज को सदा फलदायक बनाने वाले, हर समय बेहद का प्रत्यक्ष फल खाने वाले, हर समय बेहद का प्रत्यक्ष फल खाने वाले, सर्व प्राप्तियों के झूलों में झूलने वाले ऐसे सदा के समर्थ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

फ्रांस ग्रुप से

१. सभी बहुत बार मिले हो और अब फिर से मिल रहे हो – क्योंकि जब कल्प पहले मिले थे तब अब मिल रहे हो। कल्प पहले वाली आत्मायें फिर से अपना हक लेने के लिए पहुँच गई हैं? नया नहीं लगता है ना! पहचान याद आ रही है कि हम बहुत बारी मिले हैं! पहचाना हुआ घर लग रहा है। जब अपना कोई मिल जाता है तो अपने को देखकर खुशी होती है। अभी समझते हो कि वह जो सम्बन्ध था वह स्वार्थ का सम्बन्ध था, असली नहीं था। अपने परिवार में, अपने स्वीट होम में पहुँच गये। बापदादा भी भले पधारे कहकर स्वागत कर रहे हैं।

दृढ़ता सफलता को लाती है, जहां यह संकल्प होता है कि यह होगा या नहीं होगा वहां सफलता नहीं होती। जहां दृढ़ता है वहां सफ-

लता हुई पड़ी है। कभी भी सेवा में दिलशिकस्त नहीं होना क्योंकि अविनाशी बाप का अविनाशी कार्य है। सफलता भी अविनाशी होनी ही है। सेवा का फल न निकले यह हो नहीं सकता। कोई उसी समय निकलता है कोई थोड़ा समय के बाद इसलिए कभी भी यह संकल्प भी नहीं करना। सदा ऐसे समझो कि सेवा होनी ही है।

जापान ग्रुप से:- बाप द्वारा सर्व खजाने प्राप्त हो रहे हैं? भरपूर आत्मायें हैं, ऐसा अनुभव करते हो? कितना भी आज की वह दुनिया में कोई धनवान हो लेकिन जो खजाना आपके पास है वह किसी के पास भी नहीं है। तो वास्तविक सच्चे वी.आई.पी कौन हैं? आप हो ना। वह पोजीशन तो आज है कल नहीं लेकिन आपका यह ईश्वरीय पोजीशन कोई छीन नहीं सकता। बाप के घर में श्रृंगार बच्चे हो। जैसे फूलों से धर को सजाया जाता है ऐसे बाप के घर के श्रृंगार हो। तो सदा स्वयं को मैं बाप श्रृंगार हूँ ऐसा समझ श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रहो। कभी भी कमाजोरी की बातें याद नहीं करना। बीती बातों को याद करने से और ही कमजोरी आ जायेगी। पास्ट सोचेंगे तो रोना आयेगा इसलिए पास्ट अर्थात् फिनिश। बाप की याद शक्तिशाली आत्मा बना देती है। शक्तिशाली आत्मा के लिए मेहनत भी मुहब्बत में बदल जाती है। जितना ज्ञान का खजाना दूसरों को दते हैं उतना वृद्धि होती है। हिम्मत और उल्लास द्वारा सदा उन्नति को पाते आगे बढ़ते चलो। अच्छा–

12-3-84

## सन्तुष्टता

सर्व खजानों और शक्तियों से मालामाल करने वाले बापदादा अपने प्रसन्नचित, सन्तुष्ट बच्चों के प्रति बोले:-

''आज बापदादा चारो ओर के दूर होते समीप रहने वाले सभी बच्चों के सन्तुष्टता वा रुहानियत और प्रसन्नता की मुस्कराहट देख रहे थे। सन्तुष्टता रुहानियत की सहज विधि है। प्रसन्नता सहज सिद्धि है। जिसके पास सन्तुष्टता है वह सदा प्रसन्न स्वरुप अवश्य दिखाई देगा। सन्तुष्टता सर्व प्राप्ति स्वरुप है। सन्तुष्टता सदा हर विशेषता को धारण करने में सहज साधन है। सन्तुष्टता का खजाना सर्व खजानों को स्वत: ही अपनी तरफ आकर्षित करता है। सन्तुष्टता ज्ञान की सबजेक्ट को प्रत्यक्ष प्रमाण है। सन्तुष्टता बेफिकर बादशाह बनाती है। सन्तुष्टता सदा स्वमान की सीट पर सेट रहने का साधन है। सन्तुष्टता महादानी, विश्व कल्याणी वरदानी सदा और सहज बनाती है। सन्तुष्टता हद के मेरे तेरे के चक्र से मुक्त कराए स्वदर्शन चक्रधारी बनाती है। सन्तुष्टता सदा निर्विकल्प, एकरस के विजयी आसन की अधिकारी बनाती है। सदा बापदादा के दिलतख्तनशीन, सहज स्मृति के तिलकधारी, विश्व परिवर्तन के सेवा के ताजधारी इसी अधिकार के सम्पन्न स्वरुप में स्थित करती है। सनतुष्टता ब्राह्मण जीवन का जीयदान है। ब्राह्मण जीवन को उन्नति का सहज साधन है। स्व से सन्तुष्ट, परिवार से सन्तुष्ट और परिवार उनसे सन्तुष्ट। किसी भी परिस्थिति में रहते हुए, वायुमण्डल वायब्रेशन की हलचल में भी सन्तुष्ट। ऐसे सन्तुष्टता स्वरुप, श्रेष्ठ आत्मा विजयी रत्न के सर्टीफिकेट के अधिकारी है। तीन सर्टीफि-केट लेने पड़ें :-

(१) स्व की स्व से सन्तुष्टता (२) बाप द्वारा सदा सन्तुष्टता (३) ब्राह्मण परिवार द्वारा सन्तुष्टता।

इससे अपने वर्तमान और भविष्य को श्रेष्ठ बनासकते हो। अभी भी सर्टीफिकेट लेने का समय है। ले सकते हैं लेकिन ज्यादा समय नहीं है। अभी लेट हैं लेकिन टूलेट नहीं हैं। अभी भी सन्तुष्टता की विशेषता से आगे बढ़ सकते हो। अभी लास्ट सो फास्ट सो फर्स्ट की मार्जिन है। फिर लास्ट सो लास्ट हो जायेंगे। तो आज बापदादा इसी सर्टीफिकेट को चेक कर रहे थे। स्वयं भी स्वयं को चेक कर सकते हो। प्रसन्नचित हैं या प्रश्नचित हैं? डबल विदेशी प्रसन्नचित वा सन्तुष्ट हैं। प्रश्न खत्म हुए तो प्रसन्न हो ही गये। सन्तुष्टता का समय ही संगमयुग है। सन्तुष्टता का ज्ञान अभी है। वहां इस सन्तुष्ट असन्तुष्ट के ज्ञान से परे होंगे। अभी संगमयुग का ही यह खजाना है। सभी सन्तुष्ट आत्मायें सर्व को सन्तुष्टता का खजाना देने वाली हो। दाता के बच्चे मास्टर दाता हो। इतना जमा किया है ना! स्टाक फुल कर दिया है या थोड़ा कम रह गया है? अगर स्टाक कम है तो विश्व कल्याणकारी नहीं बन सकते। सिर्फ कल्याणी बन जायेंगे। बनना तो बाप समान है ना अच्छा–

सभी देश विदेश के सर्व खजानों से सम्पन्न मास्टर सर्वशक्तिवान होकर जा रहे हो ना। आजा है तो जाना भी है। बाप भी आते हैं तो जाते भी हैं ना। बच्चे भी आते हैं और सम्पन्न बनकर जाते हैं। बाप समान बनाने के लिए जाते हैं। अपने ब्राह्मण परिवार की वृद्धि करने के लिए जाते हैं। प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाने जाते हैं। इसीलिए जा रहे हो ना! अपनी दिल से वा बन्धन से नहीं जा रहे हो। लेकिन बाप के डायरेक्शन से सेवा प्रति थोड़े समय के लिए जा रहे हो! ऐसे समझ जा रहे हो ना? ऐसे नहीं कि हम तो हैं ही अमेरिका के, आस्ट्रेलिया के.... नहीं। थोड़े समय के लिए बापदादा ने सेवा के प्रति निमित्त बनाकर भेजा है। बापदादा भेज रहे हैं, अपने मन से नहीं जाते। मेरा घर है, मेरादेश है। नहीं! बाप सेवा स्थान पर भेज रहे हैं। सभी सदा न्यारे और बाप के प्यारे! कोई बन्धन नहीं। सेवा का भी बन्धन नहीं। बाप ने भेजा है बाप जाने। निमित्त बने हैं, जब त क और जहां निमित्त बनावें तब तक के लिए निमित्त हैं। ऐसे डबल लाइट हो ना! पाण्डव भी न्यारे और प्यारे हैं ना। बन्धन वाले तो कोई नहीं हैं। न्यारा बनना ही प्यारा बनना है। अच्छा–

सदा सन्तुष्टता की रुहानियत में रहने वाले, प्रसन्नचित रहने वाले सदा हर संकल्प, बोल, कर्म द्वारा सर्व को सन्तुष्टता का बल देने वाले, दिलशिकस्त आत्माओं को खजानों से शक्तिशाली बनाने वाले, सदा विश्व कल्याणकारी बेहद के बेफिकर बादशाहों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

दादी जी तथा दादी जानकी जी से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

होलीहंसों के रुप में बसन्त की जोड़ी अच्छी है। यह (जानकी दादी) शान्ति से रुप बन सेवा ज्यादा पसन्द करती है और इनको तो बोलना ही पड़ता है। यह जब भी चाहे एकान्त में चली जाती है। इसे रुप की सेवा पसन्द है, वैसे तो आलराउन्ड हैं सभी लेकिन फिर भी रुप बसन्त की जोड़ी है। हम दोनों संस्कार की आवश्कता है। जहां वाणी काम नहीं करेगी तो रुप काम करेगा और जहां रुप काम नहीं कर सकता वहां बसन्त काम करेगा। तो जोड़ी अच्छी है। जो जोड़ी बनती है। वह सब अच्छी है। वह भी जोड़ी अच्छी थी – यह भी अच्छी है। (दीदी के लिए) ड्रामा में वह गुप्त नदी हो गई। उनसे डबल विदेशियों का भी बहुत प्यार है। कोई बात नहीं। दीदी का दूसरा रुप देख लिया। सब देखकर कितने खुश होते हैं। सभी महारथी साथ हैं। बृजइन्द्रा, निर्मलशान्ता सब दूर होते भी साथी हैं! शक्तियों का अच्छा सहयोग है। सभी एक दो को आगे रखने के कारण आगे बढ़ रहे हैं। और निमित्त शक्तियों को आगे रखने के कारण सब आगे हैं। सेवा के बढ़ने के कारण ही यह है, एक दो को आगो बढ़ाना। आपस में प्यार है। युनिटी है। सदा दूसरे की विशेषता वर्णन करना यही सेवा में वृद्धि करना है। इसी विधि से सदा वृद्धि हुई है और होती रहेगी। सदैव विशेषता और विशेषता देखने का औरों को सिखाना यही संगठन की माला की डोर है। मोती भी तो धागे में पिरोते हैं ना। संगठन का धागा है ही यह। विशेषता के सिवाए और कोई वर्णन नहीं। क्योंकि मधुबन महान भूमि है। महा भाग्य भी है तो महा पाप भी है। मधुबन में जा करके अगर ऐसा कोई व्यर्थ बोलता है तो उसका बहुत पाप बन जाता है। इसलिए सदैव विशेषता देखने का चश्मा पड़ा हुआ हो। व्यर्थ देख नहीं सकते। जैसे लाल चश्मे के सिवाए लाल के और कुछ देखते हैं क्या! तो सदैव यही चश्मा पड़ा हुआ हो विशषता देखने का। कभी कोई बात देखें भी तो उसका वर्णन कभी नहीं करो। वर्णन किया भाग्य गया। कुछ भी कमी आदि है तो उसका जिम्मेवाद बाप है, निमित्त किसने बनाया! बाप ने। तो निमित्त बने हुए की कमी वर्णन करना माना बाप की कमी वर्णन करना। इसलिए इन्हों के लिए कभी भी बिना शुभ भावना के और कोई वर्णन नहीं कर सकते।

बापदादा तो आप रत्नों को अपने से भी श्रेष्ठ देखते हैं। बाप का श्रृंगार यह है ना। तो बाप को श्रृंगारने वाले बच्चे तो श्रेष्ठ हुए ना। बापदादा तो बच्चों की महिमा कर खुश होते रहते हैं। वाह मेरा फलाना रत्न। वाह मेरा फलाना रत्न। यही महिमा करते रहते हैं। बाप कभी किसकी कमजोरी को नहीं देखते। ईशारा भी देते तो भी विशेषता पूर्वक रिगार्ड के साथ इशारा देते हैं। नहीं तो बाप को अथार्टी है ना, लेकिन सदैवी रिगार्ड देकर फिर ईशारा देते हैं। यही बाप की विशेषता सदा बच्चों में भी इमर्ज रहे। फालो फादर करना है ना।

बापदादा के आगे सभी मुख्य बहनें बैठी हैं

जीवनमुक्त जनक आपका गायन है ना। जीवनमुक्त और विदेशी दो टाइटलस हैं।(दादी के लिए) यह तो है ही मणि। सन्तुष्ट मणी, मस्तक मणी, सफलता की मणी, कितनी मणियां हैं। सब मणियां ही मणियां हैं। मणियों को कितना भी छिपाके रखो लेकिन मणी की चमक कभी छिप नहीं सकती। धूल में भी चमकेगी। लाइट का काम करेगी। इसलिए नाम भी वही है, काम भी वही है। इनका भी गुण वही है, देह मुक्त जीवन मुक्त। सदा जीवन की खुशी के अनुभव की गहाराई में रहती हैं। इसको ही कहते हैं जीवन मुक्त।

15-3-84

## होली उत्सवपवित्र बनने, बनाने का यादगार

होली हंस आत्माओं प्रति अव्यक्त बापदादा बोले:-

''होलीएस्ट बाप होलीहंसों से हाली डे मनाने आये हैं। होली डे इस संगमयुग को कहा जाता है। संगमयुग है ही होली डे। तो होलीएस्ट बाप होली बच्चों से होली डे मनाने आये हैं। दुनिया की होली एक-दो दिन की है और आप होली हंस संगमयुग ही होली मनाते हो। वो रंग लगाते हैं और आप बाप के संग के रंग में बाप समान सदा के लिए होली बन जाते हो! हद से बेहद के हो जाने से सदाकाल के लिए होली अर्थात् पवित्र बन जाते हो। यह होली का उत्सव होली अर्थात् पवित्र बनाने का, बनने का उत्साह दिलाने वाला है। जो भी यादगार विधि मनाते हैं उन सब विधियों में पवित्र बनने का सार समाया हुआ है। पहले होली बनने वा होली मनाने के लिए अपवित्रता, बुराई को भस्म करना है, जलाना है। जब तक अपवित्रता को सम्पन्न समाप्त नहीं किया है तब तक पवित्रता का रंग चढ़ नहीं सकता। पवित्रता की दृष्टि से एक-दो में रंग रंगने का उत्सव मना नहीं सकते। भिन्न-भिन्न भाव भूलकर एक ही परिवार के हैं, एक ही समान हैं अर्थात् भाई-भाई के एक समान वृत्ति से मनाने का यादगार है। वे तो लौकिक रुप में मनाने लिए छोटा बड़ा, नर-नारी समान भाव में मनावें इस भाव से मनाते हैं। वास्तव में भाई-भाई के समान स्वरुप की स्मृति अविनाशी रंग का अनुभव कराती

है। जब इस समान स्वरुप में स्थित हो जाते हैं तब ही अविनाशी खुशी की झलक अनुभव होती है और सदा के लिए उत्साह रहता है कि सर्व आत्माओं को ऐसा अविनाशी रंग लगावें। रंग पिचकारी द्वारा लगाते हैं। आपकी पिचकारी कौन-सी है? आपके दिव्य बुद्धि रुपी पिचकारी में अविनाशी रंग भरा हुआ है ना। संग के रंग से अनुभव करते हो, उन भिन्न-भिन्न अनुभवों के रंग से पिचकारी भरी हुई है ना। भरी हुई बुद्धि की पिचकारी से किसी भी आत्मा को दृष्टि द्वारा, वृत्ति द्वारा मुख द्वारा इस रंग में रंग सकते हो जो वह सदा के लिए होली बन जाए। वो होली मनाते हैं, आप होली बनाते हो। सब दिन होली डे के बना देते हो। वो अल्पकाल के लिए अपनी खुशी की मूड बनाते हैं मनाने के लिए लेकिन आप सभी सदा मनाने के लिए होली और हैपी मूड में रहते हो। मूड बनानी नहीं पड़ती है। सदा रहते हो! होली मूड में और किसी प्रकार की मूड नहीं। होली मूड सदा हल्की, सदा निश्चिन्त सदा सर्व खजानों से सम्पन्न, बेहद के स्वराज्य अधिकारी। यह जो भिन्न-भिन्न मूड बदलते हैं, कब खुशी की, कब ज्यादा सोचने की, कभी हल्की, कभी भारी – यह सब मूड बदल कर सदा हैपी और होली मूड वाले बन जाते हो। ऐसा अविनाशी उत्सव बाप के साथ मनाते हो। मिटाना, मनाना और फिर मिलन मनाना। जिसका यादगार जलाते हैं, रंग लगाते हैं और फिर मिलन मनाते हैं। आप सभी भी जब बाप के रंग में रंग जाते हो, ज्ञान के रंग में, खुशी के रंग में, कितने रंगों की होली खेलते हो। जब इन सब रंग से रंग जाते हो तो बाप समान बन जाते हो। और जब समान आपस में मिलते हैं तो कैसे मिलेंगे! स्थूल में तो गले मिलते, लेकिन आप कैसे मिलते? जब समान बन जाते तो स्नेह में समा जाते हैं। समाना ही मिलना है। तो यह सारी विधि कहाँ से शुरु हुई? आप अविनाशी मनाते, वो विनाशी यादगार रुव मनाकर खुश हो जाते हैं। इससे सोचो कि आप सभी कितने अविनाशी उत्सव अर्थात् उत्साह में रहने के अनुभवी बने हो जो अब सिर्फ आपके यादगार दिन को भी मनाने से खुश हो जाते हैं। अन्त तक भी आपके उत्साह और खुशी का यादगार अनेक आत्माओं को खुशी का अनुभव कराता रहता है। तो ऐसे उत्साह भरे जीवन, खुशियों से भरी जीवन बना ली है ना।

ड्रामा के अन्दर यही संगमयुग का वन्डरफुल पार्ट है जा अविनाशी उत्सव मनाते हुए अपना यादगार उत्सव भी देश रहे हो। एक तरफ चैतन्य श्रेष्ठ आत्मायें हो। दूसरे तरफ अपने चित्र देख रहे हो। एक तरफ याद स्वरुप बने हो, दूसरे तरफ अपने हर श्रेष्ठ कर्म का यादगार देख रहे हो। महिमा योग्य बन गये हो और कल्प पहले की महिमा सुन रहे हो। यह वन्डर है ना। और स्मृति से देखो कि यह हमारा गायन है! वैसे तो यह हर आत्मा भिन्न नाम रुप से अपना श्रेष्ठ कर्म का यादगार चित्र देखते भी हैं लेकिन जानते नहीं है। अभी गाँधी जी भी भिन्न नाम रुप से अपनी फिल्म देखता तो होगा ना। लेकिन पहचान नहीं। आप पहचान से अपने चित्र देखते हो। जानते हो कि यह हमारे चित्र हैं! यह हमारे उत्साह भरे दिनों का यादगार उत्सव के रुप में मना रहे हैं। यह ज्ञान सारा आ गया है ना। डबल विदेशियों के चित्र मन्दिरों में है? यह देलवाड़ा मन्दिर में अपना चित्र देखा है? या सिर्फ भारत वालों के चित्र हैं? सभी ने अपने चित्र देखे? यह पहचाना कि हमारे चित्र हैं। जैसे हे अर्जुन एक का मिसाल है, वैसे यादगार चित्र भी थोड़े दिखाते हैं। परन्तु हैं सभी के। ऐसे नहीं समझो कि यह तो बहुत थोड़े चित्र हैं। हम कैसे होंगे। यह तो सैम्पल दिखाया है। लेकिन है आप सबका यादगार। जो याद में रहते हैं उनका यादगार जरुर बनता है। समझा। तो पिचकारी बड़ी सभी की भरी हुई है ना। छोटी-छोटी तो नहीं जो एक बार में ही समाप्त हो जाए। फिर बार-बार भरना पड़े। ऐसी मेहनत करने की भी दरकार नहीं। सभी को अविनाशी रंग से रंग लो। होली बनाने की होली मनाओ। आपकी तो होली हो गई है ना – कि मनानी है? होली हो गई अर्थात् होली मना ली। रंग लगा हुआ है ना। यह रंग साफ नहीं करना पड़ेगा। स्थूल रंग लगाते भी खुशी से हैं और फिर उनसे बचने भी चाहते हैं। और आपका यह रंग तो ऐसा है जो कहेंगे और भी लगाओ। इससे कोई डरेगा नहीं। उस रंग से तो डरते हैं – ऑख में न लग जाए। यह तो कहेंगे जितना लगाओ उतना अच्छ्ज्ञ। तो ऐसी होली मना ली है ना। होली बन गये! यह पविद्ध बनने बनाने का यादगार है।

यहाँ भारत में तो अनेक कहानियां बना दी हैं क्योंकि कहानियाँ सुनने की रुची रखते हैं। तो हर उत्सव की कहानियाँ बना दी हैं। आपकी जीवन कहानी से भिन्न-भिन्न छोटी-छोटी कहानियाँ बना दी हैं। कोई राखी की कहानी बना दी कोई होली की कहानी, कोई जन्म की कहानी बना दी। कोई राज्य दिवस की बना दी। लेकिन यह हैं सब आपके जीवन कहानियों की कहानियाँ। द्वापर में व्यवहार में भी इतना समय नहीं देना पड़ता था, फ्री थे। संख्या भी आज के हिसाब से कम थी। सम्पत्ति भी रजोप्रधान थी – स्थिति भी रजोप्रधान थी। इसलिए बिजी रहने के लिए यह कथा, कहानियाँ, कीर्तन यह साधन अपनाये हैं। कुछ तो साधन चाहिए ना। आप लोग तो फ्री होते हो तो सेवा करते हो या याद में बैठ जाते हो। वो उस समय क्या करें! पार्थना केरंगे या कथा कीर्तन करेंगे। इसलिए फ्री बुद्धि हो करके कहानियाँ बड़ी अच्छी-अच्छी बनाई हैं। फिर भी अच्छा है जो अपवित्रता में ज्यादा जाने से बच गये। आजकल के साधन तो ऐसे हैं जो ५ वर्ष के बच्चे को ही विकारी बना देते हैं। और उस समय भी कुछ मर्यादायें भी थीं– लेकिन हैं सब आपका यादगार। इतना नशा और खुशी है ना कि हमारा यादगार मना रहे हैं। हमारे गीत गा रहे हैं। कितने प्यार से गीत गाते हैं। इतने प्यार स्वरुप आप बने हैं तब तो प्यार से गाते हैं। समझा– होली का यादगार क्या है! सदा खुश रहो, हल्के रहो यही मनाना है। अच्छा – कभी मूड आफ नहीं करन। सदा होली मूड, लाइट मूड, हैपी मूड। अभी बहुत अच्छे समझदार बनते जाते हैं। पहले दिन जब मधुबन में आते हैं वह फोटो और फिर जब जाते हैं वह फोटो दोनों निकलाने चाहिए। समझते ईशारे से हैं। फिर भी बापदादा के

वा बापदादा के घर के श्रृंगार हो। आपनके आने से देखो मधुबन की रौनक कितनी अच्छी हो जाती हैं। जहाँ देखो वहाँ फरिश्ते आ जा रहे हैं। रौनक है ना! बापदादा जानते हैं आप श्रृंगार हो। अच्छज्ञ–

सभी ज्ञान के रंग में रंगे हुए, सदा बाप के संग के रंग में रहने वाले, बाप समान सम्पन्न बन औरों को भी अविनाशी रंग में रंगने वाले, सदा होली डे मनाने वाले, होली हंस आत्माओं को बापदादा की सदा हैपी और होली रहने की मुबारक हो। सदा स्वयं को सम्पन्न बनाने की उमंग उत्साह में रहने की मुबारक हो। साथ-साथ चारों ओर के लगन में मगन रहने वाले सदा मिलन मनाने वाले, विशेष बच्चों को याद प्यार और नमस्ते!

2-4-84

## बिन्दू का महत्व

ज्योतिबिन्दु, ज्ञान के सिन्धु शिवबाबा अपने ज्योतिबिन्दु आत्माओं प्रति बोले:-

आज भाग्यविधाता बाप सर्व भागयवान बच्चों से मिलने आये हैं। भाग्य विधाता बाप सभी बच्चों को भाग्य बनाने की अति सहज विधि बता रहे हैं। सिर्फ बिन्दु के हिसाब को जानो। बिन्दु का हिसाब सबसे सहज है। बिन्दु के महत्व को जाना और महान बने। सबसे सहज और महत्वशाली बिन्दु का हिसाब सभी अच्छी तरह से जान गये हो ना! बिन्दु कहना और बिन्दु बनना। बिन्दु बन बिन्दु बाप को याद करना है। बिन्दु थे और अब बिन्दु स्थिति में स्थित हो बिन्दु बाप समान बन मिलन मनाना है। यह मिलन मनाने का युग, उड़ती कला का युग कहा जाता है। ब्राह्मण जीवन है ही मिलने और मनाने के लिए। इसी विधि द्वारा सदा कर्म करते हुए कर्मों के बन्धन से मुक्त कर्मातीत स्थिति का अनुभव करते हो। कर्म के बन्धन में नहीं आते लेकिन सदा बाप के सर्व सम्बन्ध में रहते हो। करावनहार बाप निमित्त बनाए करा रहे हैं। तो स्वयं साक्षी बन गये। इसलिए इस सम्बन्ध की स्मृति बन्धनमुक्त बना देती है। जहाँ सम्बन्ध से करहते वहाँ बन्धन नहीं होता। मैंने किया, यह सोचा तो सम्बन्ध भूला और बन्धन बना! संगमयुग बन्धमुक्त सर्व सम्बन्ध युक्त, जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव का युग है। तो चेक करो सम्बन्ध में रहते हो या बन्धन में आते? सम्बन्ध में स्नेह के कारण प्राप्ति है बन्धन में खींचातान, टेन्शन के कारण दु:ख और अशान्ति की हलचल है। इसलिए जब बाप ने बिन्दु का सहज हिसाब सिखा दिया तो देह का बन्धन भी समाप्त हो गया। देह आपकी नहीं है। बाप को दे दिया तो बाप की हुई। जब आपका निजी बन्धन, मेरा शरीर या मेरी देह यह बन्धन समाप्त हुआ। मेरी देह कहेंगे क्या, आपका अधिकार है? दी हुई वस्तु पर आपका अधिकार कैसे हुआ? दे दी है वा रख ली है? कहना तेरा और मनना मेरा यह तो नहीं है ना!

जब तेरा कहा तो मेरे-पन का बन्धन समाप्त हो गया। यह हद का मेरा, यही मोह काक धागा है। धागा कहो, जंजीर कहो, रस्सी कहो, यह बन्धन में बांधता है। जब सब कुछ आपका है यह सम्बन्ध जोड़ लिया तो बन्धन समाप्त हो सम्बन्ध बन जाता है। किसी भी प्रकार का बन्धन चाले देह का, स्वभाव का संस्कार का, मन के झुकाव का यह बन्धन सिद्ध करता है बाप से सर्व सम्बन्ध की, सदा के सम्बन्ध की कमजोरी है। कई बच्चे सदा और सर्व सम्बन्ध में बन्धन मुक्त रहते। और कई बच्चे समय प्रमाण मतलब से सम्बन्ध जोड़ते हैं। इसलिए ब्राह्मण जीवन का अलौकिक रुहानी मजा पाने से वंचित रह जाते हैं। न स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट और न दूसरों से सन्तुष्टता का आशीर्वाद ले सकते। ब्राह्मण जीवन श्रेष्ठ सम्बन्धों का जीवन है ही बाप और सर्व ब्राह्मण परिवार का आशीर्वाद लेने का जीवन। आशीर्वाद अर्थात् शुभ भावनायें, शुभ कामनायें। आप ब्राह्मणों का जन्म ही बापदादा की आशीर्वाद कहो, वरदान कहो इसी अधार से हुआ है। बाप ने कहा आप भाग्यवान, श्रेष्ठ विशेष आत्मा हो। इसी स्मृति रुपी आशीर्वाद वा वरदान से शुभ भावना, शुभ कामना से आप ब्राह्मणों का नया जीवन, नया जन्म हुआ है। सदा आशीर्वाद लेते रहना। यही संगमयुग की विशेषता है! लेकिन इन सबका आधार सर्व श्रेष्ठ सम्बन्ध है। सम्बन्ध मेरे-मेरे की जंजीरों को, बन्धन को सेकण्ड में समाप्त कर देता है। और सम्बन्ध का पहला स्वरुप वो ही सहज बात है बाप भी बिन्दु मैं भी बिन्दु और सर्व आत्मायें भी बिन्दु। तो बिन्दु का ही हिसाब हुआ ना। इसी बिन्दु में ज्ञान का सिन्धु समाया हुआ है। दुनिया के हिसाब में भी बिन्दु १० को १०० बना देता और १०० को हजार बना देता है। बिन्दु बढ़ाते जाओ और संख्या बढ़ाते जाओ। तो महत्व किसका हुआ? बिन्दु का हुआ ना। एसे ब्राह्मण जीवन में सर्व प्राप्ति का अधार बिन्दु है।

अनपढ़ भी बिन्दु सहज सकते हैं ना! कोई कितना भी व्यस्त हो तन्दरुस्त न हो, बुद्धि कमजोर हो लेकिन बिन्दु का हिसाब सब जान सकते। मातायें भी हिसाब में तो होशियार होती हैं ना। तो बिन्दु का हिसाब सदा याद रहे! अच्छा–

सर्व स्थानों से अपने स्वीट होम में पहुँच गये। बापदादा भी सभी बच्चों को अपने भाग्य बनाने की मुबारक देते हैं। अपने घर में आये हैं। यही अपना घर दाता का घर है। अपना घर आत्मा और शरीर को आराम देने का घर है। आराम मिल रहा है ना! डबल प्राप्ति है। आराम भी मिलता, राम भी मिलता। तो डबल प्राप्ति हो गई ना! बाप के घर का बच्चे श्रृंगार बच्चों को देख रहे हैं। अच्छज्ञ–

सदा सर्व सम्बन्ध द्वारा बन्धन मुक्त, कर्मातीत स्थिति का अनुभव करने वाले, सदा बिन्दु के महत्व को जान महान बनने वाले, सदा

सर्व आत्माओं द्वारा सन्तुष्टता की शुभ भावना, शुभ कामना की आशीर्वाद लेने वाले, सर्व की ऐसी आशीर्वादा देने वाले, सदा स्व्यं को साक्षी समझ निमित्त भाव से कर्म करने वाले, एसे सदा अलौकिक रुहानी ममौज मनाने वाले सदा मजे की जीवन में रहने वाले, बोझ को समाप्त करने वाले, ऐसे सदा भाग्यवान आत्माओं को भाग्य विधाता बाप की याद प्यार और नमस्ते।

दादियों से:- समय तीव्रगति से जा रहा है। जैसे समय तीव्रगति से चलता जा रहा है – ऐसे सर्व ब्राह्मण तीव्रगति से उड़ते हैं। इतने हल्के डबल लाइट बने हैं? अभी विशेष उड़ाने की सेवा है। ऐसे उड़ाती हो? किस विधि से सबको उड़ाना है? क्लास सुनते-सुनते क्लास कराने वाले बन गये। जो भी विषय आप शुरु करेंगे उसके पहले उस विषय की पाइंटस सबसे पास होंगी। तो कौन-सी विधि से उड़ाना है इसका प्लैन बनाया है? अभी विधि चाहिए हल्के बनाने की। यह बोझ ही नीचे ऊपर लाता है। किसको कोई बोझ है किसको कोई बोझ है। चाहे स्वयं के संस्कारों का बोझ, चाहे संगठन का... लेकिन बोझ उड़ने नहीं देगा। अभी कोई उड़ते भी हैं तो दूसरे के जोर से। जैसे खिलौना होता है उसको उड़ाते हैं, फिर क्या होता? उड़कर नीचे जा जाता। उड़ता जरुर है लेकिन सदा नहीं उड़ता। अभी जब सर्व ब्राह्मण आत्मायें उड़ें तब और आत्माओं को उड़ाएं बाप के नजदीक पहुँचा सकें। अभी तो उड़ाने के सिवाए, उड़ने के सिवाए और कोई विधि नहीं है। उड़ने की गति ही विधि है। कार्य कितना है और समय कितना है?

४७ वर्ष में एक डेढ़ लाख ब्राह्मण हुए हैं। लेकिन कम से कम ९ लाख तो पहले चाहिए। ऐसे तो संख्या ज्यादा होगी लेकिन सारे विश्व पर राज्य करेंगे तो कम से कम ९ लाख तो हों। समय प्रमाण श्रेष्ठ विधि चाहिए। श्रेष्ठ विधि है ही उड़ाने की विधि। उसका प्लैन बनओ। छोटे-छोटे संगठन तैयार करो। कितने वर्ष अव्यक्त पार्ट को भी हो गया! साकार पालना, अव्यक्त पालना कितना समय बीत गया। अभी कुछ नवीनता करनी है ना। प्लैन बनाओ। ८४ में कम से कम ८४ का चक्र तो पूरा हो। उड़ने और नीचे आने का चक्र तो पूरा हो। ८४ जन्म हैं, ८४ का चक्र गाया हुआ है। ८४ में जब यह चक्र पूरा होगा तब स्वदर्शन चक्र दूर से आत्माओं को समीप लायेगा। यादगार में क्या दिखाते हैं? एक जगह पर बैठे चक्र भेजा और वह स्वदर्शन चक्र स्वयं ही आत्माओं को समीप ले आया। स्व्यं नहीं जाते। चक्र चलाते हैं। तो पहले यह चक्र पूरे हों तब तो स्वदर्शन चक्र चलें। तो अभी ८४ में यह विधि अपनाओ जो सब हद के चक्र समाप्त हों ऐसे ही सोचा है ना। अच्छा–

टीचर्स से:- टीचर्स तो हैं ही उड़ती कला वाली! निमित्त बना – यही उड़ती कला का साधन है। तो निमित्त बने हो अर्थात् ड्रामा अनु-सार उड़ती कला का साधन मिला हुआ है। इसी विधि द्वारा सदा सिद्धि को पाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। निमित्त बनना ही लिफ्ट है। तो लिफ्ट द्वारा सेकण्ड में पहुँचने वाले उड़ती कला वाले हुए। चढ़तल कला वाले नहीं। हिलने वाले नहीं लेकिन हिलाने से बचाने वाले। आगे की सेक में आने वाले नहीं लेकिन आग बुझाने वाले। तो निमित्त की विधि से सिद्धि को प्राप्त करो। टीचर्स का अर्थ ही है निमित्त भाव। यह निमित्त भाव ही सर्व फल की प्राप्ति स्वत: कराता है। अच्छा–

4-4-84

## संगमयुग की श्रेष्ठ वेला श्रेष्ठ तकदीर की तस्वीर बनाने की वेला

देश विदेश से आये, सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के पुरुषार्थी बच्चों प्रति अव्यक्त बापदादा बोले:-

आप बापदादा हरेक ब्राह्मण श्रेष्ठ आत्मा के श्रेष्ठ जीवन के जन्म की वेला, तकदीर की रेखा देख रहे थे। जन्म की वेला सभी बच्चें की श्रेष्ठ हैं क्योंकि अभी युग ही पुरुषोत्तम श्रेष्ठ है। श्रेष्ठ संगमयुग पर अर्थात् श्रेष्ठ वेला में सभी का श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म हुआ। जन्म वेला सभी की श्रेष्ठ है। तकदीर की रेखा, तकदीर भी सभी ब्राह्मणों की श्रेष्ठ है। क्योंकि श्रेष्ठ बाप के शिव वंशी ब्रह्माकुमार वा कुमारी हैं। तो श्रेष्ठ बाप, श्रेष्ठ जन्म, श्रेष्ठ वर्सा, श्रेष्ठ परिवार, श्रेष्ठ खजाने – यह तकदीर की लकरी जन्म से सभी की श्रेष्ठ है। वेला भी श्रेष्ठ और प्राप्ति के कारण तकदीर की लकीर भी श्रेष्ठ है। यह तकदीर सभी बच्चों को एक बाप द्वारा एक जैसी प्राप्त है। इसमें अन्तर नहीं है। फिर भी एक जैसी तकदीर प्राप्त होते भी नम्बरवार क्यों? बाप एक, जन्म एक, वर्सा एक, परिवार एक, वेला भी एक संगमयुग, फिर नम्बर क्यों? सर्व प्राप्ति अर्थात् तकदीर सभी को बेहद की मिली है। अन्तर क्या हुआ? बेहद की तकदरी की जीवन के कर्म की तस्वीर में लाना इसमें यथा शक्ति होने के कारण अन्तर पड़ जाता है। ब्राह्मण जीवन अर्थात् तकदीर को तस्वीर में लाना, जीवन में लाना। हर कर्म में लाना, हर संकल्प से, बोल से, कर्म से तकदीरवान को तकदीर अनुभव हो अर्थात् दिखाई दे। ब्राह्मण अर्थात् तकदीरवान आत्मा के नयन, मस्तक, मुख की मुस्कराहट हर कदम सभी को श्रेष्ठ तकदीर की अनुभूति करावे। इसको कहा जाता है तकदीर की तस्वीर बनाना। तकदीर को अनुभव की कलम से, कर्म के कागज के तस्वीर में लाना। तकदीर के तस्वीर की चित्र रेखा बनाना। तस्वीर तो सभी बना रहे हो लेकिन किसकी तस्वरी सम्पन्न् है और किसकी तस्वीर कुछ न कुछ किसी बात में कम रह जाती है। अर्थात् प्रैक्टिकल जीवन में लाने में किसकी मस्तक रेखा अर्थात् मंसा, नयन रेखा अर्थात् रुहानी दृष्टि, मुख की मुस्कराहट की रेखा अर्थात् सदा सर्व प्राप्ति स्वरुप सन्तुष्ट आत्मा। सन्तुष्टता ही मुस्कराहट की रेखा है। हाथों की रेखा अर्थात् श्रेष्ठ कर्म की रेखा। पांव की रेखा अर्थात हर कदम श्रीमत प्रमाण चलने की शक्ति। इसी प्रकार तकदीर की

तस्वीर बनाने में किसका किस में, किसका किस में अन्तर पड़ जाता है। जैसे स्थूल तस्वीर भी बनाते हैं तो कोई को नैन नहीं बनाने आते, कोई को टांग नहीं बनाने आती। कोई मुस्कराहट नहीं बना सकते। तो फर्क पड़ जाता है ना। जितना सम्पन्न चित्र उतना मूल्यवान होता है। वो ही एक का चित्र लाखों का मूल्य कमाता और कोई १०० भी कमाता। तो अन्तर किस बात का हुआ? सम्पन्नता का। ऐसे ही ब्राह्मण आत्मायें भी सर्व रेखाओं में सम्पन्न न होने कारण किसी एक रेखा, दो रेखा की सम्पूर्णता न होने कारण नम्बरवार हो जाते हैं।

तो आज तकदीरवान बच्चों की तस्वीर देख रहे थे। जैसे स्थूल तकदीर में भी भिन्न-भिन्न तकदीर होती है। वैसे यहाँ तकदीर की भिन्न-भिन्न तस्वीरें देखी। हर तस्वरी में मुख्य मस्तक और नयन तस्वीर की वैल्यु बढ़ाते हैं। वैसे यहाँ भी मंसा वृत्ति की शक्ति और नयन रुहानी दृष्टि की शक्ति, इसका ही महत्व होता। यही तस्वीर का फाउन्डेशन हैं। सभी अपनी तस्वीर को देखो कि हमारी तस्वीर कितनी सम्पन्न बनी है। ऐसी तस्वीर बनी है जो तस्वीर में तकदीर बनाने वाला दिखाई दे। हर एक रेखा को चेक करो। इसी कारण नम्बर हो जाता है। समझा।

दाता एक है, देता भी एक जैसा है। लेकिन बनाने वाले बनाने में नम्बरवार हो जाते। कोई अष्ट और ईष्ट देव बन जाते। कोई देव बन जाते। कोई देवों की देख-देख हर्षित होने वाले हो जाते। अपना चित्र देख लिया ना। अच्छा–

साकार रुप में मिलने में तो समय और संख्या को देखना पड़ता। और अव्यक्त मिलन में समय और संख्या की बात नहीं है। अव्यक्त मिलन के अनुभवी बन जायेंगे तो अव्यक्त मिलन के विचित्र अनुभव सदा करते रहेंगे। बापदादा बच्चों के सदा आज्ञाकारी हैं। इसलिए अव्यक्त होते भी व्यक्त में आना पड़ता है। लेकिन बनना क्या है? अव्यक्त् बनना है ना या व्यक्त में आना है? अव्यक्त बनो। अव्यक्त बनने से बाप के साथ निराकार बन घर में चलेंगे। अभी वाया की स्टेज तक नहीं पहुँचे हो। फरिश्ता स्वरुप से निराकार बन घर जा सकेंगे। तो अभी फरिश्ता स्वरुप बने हो! तकदीर की तस्वरी सम्पन्न् की है? सम्पन्न तस्वीर ही फरिश्ता है। अच्छा–

सभी आये हुए भिन्न-भिन्न जोन के बच्चों को हर एक जोन की विशेषता सहित बापदादा देख-देख हर्षित् हो रहे हैं। कोई भाषा भले नहीं जानते लेकिन प्रेम और भावना की भाषा जानने में होशियार हैं। और कुछ नहीं जानते लेकिन मुरली की भाषा जानते हैं। प्रेम और भावना से न समझने वाले भी समझ जाते हैं। बंगार बिहार तो सदा बहारी मौसम में रहते। सदा बहार है।

पंजाब है ही सदा सभी को हरा भरा करने वाला। पंजाब में खेती अच्छी होती है। हरियाणा तो है ही हरा भरा। पंजार हरियाणा सदा हरियाली से हरा भरा है। जहाँ हरियाली होती है उस स्थान को सदा कुशल, श्रेष्ठ स्थान कहा जाता है। पंजाब हरियाणा सदा खुशी में हरा भरा है। इसलिए बापदादा भी देख-देख हर्षित् होते हैं। राजस्थान की क्या विशेषता है? राजस्थान चित्र रेखा में प्रसिद्ध है। रास्थान की तस्वीरें बहुत मूल्यवान होती हैं। क्योंकि राजे बहुत हुए हैं ना। तो राज्स्थान तकदीर की तस्वीरें सबसे ज्यादा मूल्यवान बनाने वाले हैं। चित्रों की रेखा में सदा श्रेष्ठ हैं। गुजरात की क्या विशेषता है? वहाँ आइनों का श्रृंगार ज्यादा होता है। तो गुजरात दर्पण है। दर्पण कहो, आइना कहो। जिसमें बाप की मूर्त देखी जाए। आइने में शक्ल देखते हैं ना। तो गुजरात के दर्पण द्वारा बाप की तस्वीर फरिश्ता स्वरुप की तस्वीर सभी को दिखाने की विशेषता है। तो गुजरात की विशेषता है बाप को प्रत्यक्ष करने वाले दर्पण। बाकी छोटा-सा तामिलनाडु रह गया। छोटा ही कमाल करता है। बड़ा कार्य करके दिखाता है। तामिलनाडु क्या करेंगे? वहाँ मन्दिर बहुत हैं। मन्दिरों में नाद बाजते हैं। तामिलनाडु की विशेषता है – नगाड़ा बजाए बाप की प्रत्यक्षता का आवाज बुलन्द करना। अच्छी विशेषता है। छोटे-पन में भी नाद बजाते हैं। भक्त लोग भी बड़े प्यार से नाद बजाते हैं। और बच्चे भी प्यार से बजाते हैं। अब हरेक स्थान अपनी विशेष्ज्ञता को प्रत्यक्ष स्व्रुप में लाओ। सभी जोन वालों से मिल लिया ना! आखिर तो ऐसा ही मिलना होगा। पुराने बच्चे कहते हैं हमको क्यों नहीं बुलाते। प्रजा भी बनाते, बढ़ाते भी रहते। तो पुरानों को नये-नयें को चांस देना पड़े तब तो संख्या बढ़े। पुरानें भी पुरानी चाल से चलते रहें तो नयों का क्या होगा। पुराने हैं दाता देने वाले और नये हैं लेने वाले। तो चांस देना हैं इसमें दाता बनना पड़े। साकार मिलन में सब हद आ जाती हैं। अव्यक्त मिलन में कोई हद नहीं। कई कहते हैं संख्या बढ़ेगी फिर क्या होगा! साकार मिलन की विधि भी तो बदलेगी। अब संख्या बढ़ती हैं तो कुछ दान पुण्य भी करना होता है। अच्छा–

सभी देख विदेश के चारों ओर के स्नेही बच्चों के स्नेह के दिल के आवाज, खुशी के गीत और दिल के समाचार के पत्रों के रेस-पान्ड में बापदादा सभी बच्चों को पदमगुणा यादप्यार के साथ रेसपान्ड दे रहे हैं कि सदा याद से अमर भर के वरदानी बन बढ़ते चलो और बढ़ाते चलो। सभी उमंग उत्साह में रहने वाले बच्चों को बापदादा स्व उन्न्ति और सेवा की उन्नति के लिए मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो। सदा साथ हो। सदा सम्पन्न और सम्पूर्ण हो, ऐसे सर्व वरदानी बच्चों को बापदादा फिर से यादप्यार दे रहे हैं। याद-प्यशर और नमस्ते।

पार्टियों से:- सदा स्व्यं को बाप समान सम्पन्न आत्मा समझते हो! जो सम्पन्न है वह सदा आगे बढ़ते रहेंगे। सम्पन्नता नहीं तो आगे नहीं बढ़ सकते। तो जैसे बाप वैसे बच्चे। बाप सागर है बच्चे मास्टर सागर हैं। हर गुण को चेक करो– जैसे बाप ज्ञान का सागर है

तो हम मास्टर ज्ञान सागर हैं। बाप प्रेम का सागर है तो हम मास्टर प्रेम के सागर हैं। ऐसे समानता को चेक करो तब बाप समान सम्पन्न बन सदा आगे बढ़ते जायेंगे। समझा– सदा ऐसी चेकिंग करते चलो। सदा इसी खुशी में रहो कि जिसको विश्व ढूंढता है। उसने हमको अपना बनाया है।

8-4-84

## संगमयुग पर प्राप्त अधिकारों से विश्व राज्य अधिकारी

ज्ञान सूर्य शिवबाबा अपने सफलता के सितारों के प्रति बोले:-

बापदादा आज स्वराज्य अधिकारी श्रेष्ठ आत्माओं की दिव्य दरबार देख रहे हैं। विश्व राज्य दरबार और स्वराज्य दोनों ही दरबार अधिकारी आप श्रेष्ठ आत्मायें बनती हो। स्वराज्य अधिकारी ही विश्व राज्य अधिकारी बनते हैं। यह डबल नशा सदा रहता है? बाप का बनना अर्थात् अनेक अधिकार प्राप्त करना। कितने प्रकार के अधिकार प्राप्त किये हैं, जानते हो? अधिकार माला को याद करो। पहला अधिकार – परमात्म बच्चे बने अर्थात् सर्वश्रेष्ठ माननीय पूज्यनीय आत्मा बनने का अधिकार पाया। बाप के बच्चे बनने के सिवाए पूज्यनीय आत्मा बनने का अधिकार प्राप्त हो नहीं सकता। तो पहला अधिकार – पूज्यनीय आत्मा बने। दूसरा अधिकार – ज्ञान के खजानों के मालिक बने अर्थात् अधिकारी बने। तीसरा अधिकार - सर्व शक्तियों के प्राप्ति के अधिकारी बने। चौथ अधिकार – सर्व कर्मेन्द्रियों जीत स्वराज्य अधिकारी बने। इस सर्व अधिकारों द्वारा मायाजीत सो जगत जीत विश्व राज्य अधिकारी बनते। तो अपने इन सर्व अधिकारों को सदा स्मृति में रखते हुए समर्थ आत्मा बन जाते। समर्थ बने हो ना।

स्वराज्य वा विश्व का राज्य प्राप्त करने के लिए विशेष ३ बातों की धारणा द्वारा ही सफलता प्राप्त की है। कोई भी श्रेष्ठ कार्य की सफलता का अधार, त्याग, तपस्या और सेवा है। इन तीनों बातों के आधार पर सफलता होगी वा नहीं होगी यह क्वेश्चन नहीं उठ सकता। जहां तीनों बातों की धारण है वहाँ सेकण्ड में सफला है ही है। हुई पड़ी है। त्याग किस बात का? सिर्फ एक बात का त्याग सर्व त्याग सहज और स्वत: कराता है। वह एक त्याग है – देह भान का त्याग हद के मैं-पन का प्याग सहज करा देता है। यह हद का मैं पन तपस्या और सेवा से वंचित करा देता है। जहाँ हद का मै-पन हैं वहाँ त्याग तपस्या और सेवा हो नहीं सकती। हद का मैं-पन, मेरा-पन, इस एक बात का त्याग चाहिए। मैं और मेरा समाप्त हो गया तो बाकी क्या रहा? बेहद का। मैं शुद्ध आत्मा हूँ और मेरा तो एक बाप दूसरा न कोई। मेरा तो एक बाप। तो जहाँ बेहदह का बाप सर्वशक्तिमान हैं, वहाँ सफलता सदा साथ है। इसी त्याग द्वारा तपस्या भी सिद्ध हो गई ना। तपस्या क्या है? मैं एक का हूँ। एक की श्रेष्ठ मत पर चलने वाला हूँ। इसी से एकरस स्थिति स्वत: हो जाती है। सदा एक परमात्मा स्मृति ये ही तपस्या है। एकरस स्थिति ये ही श्रेष्ठ आसन है। कमल पुष्प समान स्थिति यही तपस्या का आसन है। त्याग से तपस्या भी स्वत: ही सिद्ध हो जाती है। जब त्याग और तपस्या स्व्रुप बन गये तो क्या करेंगे? अपने पन का त्याग अथवा मैं-पन समाप्त हो गया। एक की लगन में मगन तपस्वी बन गये तो सेवा के सिवाए रह नहीं सकते। यह हद का मैं और मेरा सच्ची सेवा करने नहीं देता। त्यागी और तपस्वी मूर्त सच्चे सेवाधारी हैं। मैंने यह किया, मैं ऐसा हूँ, यह देह का भान जरा भी आया तो सेवाधारी के बदले बन जाते? सिर्फ सेवाधारी नामधारी बन जाते। सच्चे सेवाधारी नहीं बनते। सच्ची सेवा का फाउन्डेशन है त्याग और तपस्या। ऐसे त्यागी तपस्वी सेवाधारी सदा सफलता स्वरुप हैं। विजय, सफलता उनके गले की माला बन जाती है। जन्म सिद्ध अधिकारी बन जाता। बापदादा विश्व के सर्व बच्चों को यही श्रेष्ठ शिक्षा देते हैं। कि त्यागी बनो, तपस्वी बनो, सच्चे सेवाधारी बनो।

आज का संसार मृत्यु के भय का संसार है। (आंधी तूफान आया) प्रकृति हलचल में आप तो अचल हो ना! तमोगुणी प्रकृति का काम है हलचल करना और आप अचल आत्माओं का कार्य है प्रकृति को भी परिवर्तन करना। नथिंग न्यू। यह सब तो होना ही है। हलचल में ही तो अचल बनेंगे। तो स्वराज्य अधिकारी दरबार निवासी श्रेष्ठ आत्माओं ने समझा! यह भी राज्य दरबार है ना। राजयोगी अर्थात् स्व के राजे। राजयोगी दरबार अर्थात् स्वराज्य दरबार। आप सभी भी राजनेता बन गये ना। वह हैं देश राजनेता और आप हो स्वराज्य नेता। नेता अर्थात् नीति प्रमाण चलने वाले। तो आप धर्मनीति, स्वराज्य नीति प्रमाण चलने वाले स्वराज्य नेता हो। यथार्थ श्रेष्ठ नीति अर्थात् श्रीमत। श्रीमत ही यथार्थ नीति है। इस नीति पर चलने वाले सफल नेता हैं।

बापदादा देश के नेताओं को मुबारक देते हैं। क्योंकि फिर भी मेहनत तो करते हौ ना। भल वैराइट हैं। फिर भी देश्ख के प्रति लगन है। हमारा राज्य अमर रहे – इस लगन से मेहनत तो करते हैं ना। हमारा भारत ऊंचा रहे। यह लगन स्वत: ही मेहनत कराती है। अब समय आयेगा जब राज्य सत्त और धर्म सत्ता दोनों साथ होंगी। तब विश्व में भारत की जय-जयकार होगी। भारत ही लाइट हाउस होगा। भारत की तरफ सबकी दृष्टि होगी। भारत को ही विश्व प्रेरणा पुंज अनुभव करेगा। भारत अविनाशी खण्ड है। अविनाशी बाप की अवतरण भूमि है। इसलिए भारत का महत्व सदा महान है। अच्छा–

सभी अपने स्वीट होम में पहुँच गये। बापदादा सभी बच्चों आने की बधाई दे रहे हैं। भले पधारे। बाप के घर के श्रृंगार भले पधारे।

अच्छा–

सभी सफलता के सितारों को सदा एकरस स्थिति के आसन पर स्थित रहने वाले तपस्वी बच्चों को, सदा एक परमात्मा श्रेष्ठ याद में रहने वाली महान आत्माओं को श्रेष्ठ भावना श्रेष्ठ कामना करने वाले विश्व कल्याणकारी सेवाधारी बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री भ्राता माधव सिंह सोलंकी से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

बाप के घर में वा अपने घर में भले आये। बाप जानते हैं कि सेवा में लगन अच्छी है। कोटों में कोई ऐसे सेवाधारी है। इसलिए सेवा की मेहनत की आन्तरिक खुशी प्रत्यक्षफल के रुप में सदा मिलती रहेगी। यह मेहनत सफलता का अधार है। अगर सभी निमित्त् सेवाधारी मेहनत को अपनायें तो भारत का राज्य सदा ही सफलता को पाता रहेगा। सफलता तो मिलनी ही है। यह तो निश्चित है लेकिन जो निमित्त बनता है, निमित्त् बनने वाले को सेवा का प्रत्यक्षफल और भविष्य फल प्रापत होता है। तो सेवा के निमित्त हो। निमित्त् भाव रख सदा सेवा में आगे बढ़ते चलो। जहाँ निमित्तभाव है, मैं-पन का भाव नहीं है वहाँ सदा उन्नति को पाते रहेंग। यह निमित्त भाव शुभ भावना, शुभ कामना स्वत: जागृत करता है। आज शुभ भावना शुभ कामना नहीं है उसका कारण निमित्त् भाव के बजाए मैं-पन आ गया है। अगर निमित्त् समझें तो करावनहार बाप को समझें। करनकरावनहार स्वामी सदा ही श्रेष्ठ करोंगे। ट्रस्टी-पन के बाजए राज्य की प्रवृत्ति के गृहस्थी बन गये हैं, गृहस्थी में बोझ होता है और ट्रस्टी पन में हल्कापन होता है। जब तक हल्के नहीं तो निर्णय शक्ति भी नहीं है। ट्रस्टी हैं तो हल्के हैं तो निर्णय शक्ति श्रेष्ठ है। इसलिए सदा ट्रस्टी हैं, निमित्त् हैं, यह भावना फल-दायक है। भावना का फल मिलता है। तो यह निमित्त पन की भावना सदा श्रेष्ठ फल देती रहेगी। तो सभी साथियों को यह स्मृति दिलाओं कि निमित्त भाव, ट्रस्टीपन का भाव रखो। तो यह राजनीति विश्व के लिए श्रेष्ठ नीति हो जायेगी। सारा विश्व इस भारत की राजनीति को कापी करेगा। लेकिन इसका अधार ट्रस्टीपन अर्थात् निमित्त भाव।

कुमारों से:- कुमार अर्थात् सर्व शक्तियों को, सर्व खजानों को जमा कर औरों को भी शक्तिवान बनाने की सेवा करने वाले। सदा इसी सेवा में बिजी रहते हो ना। बिजी रहेंगे तो उन्नति होती रहेगी। अगर थोड़ा भी फ्री होंगे तो व्यर्थ चलेगा। समर्थ रहने के लिए बिजी रहो। अपना टाइमटेबल बनाओ। जैसे शरीर का टाइमटेबल बनाते हैं ऐसे बुद्धि का भी टाइमटेबल बनाओ। बुद्धि से बिजी रहने का प्लैन बनओ। तो बिजी रहने से सदा उन्नति को पाते रहेंगे। आजकल के समय प्रमाण कुमार जीवन में श्रेष्ठ बनना बहुत बड़ा भाग्य है। हम श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हैं, यही सदा सोचो। याद और सेवा का सदा बैलेन्स रहे। बैलेन्स रखने वालों को सदा ब्लैसिंग मिलती रहेगी। अच्छा–

10-4-84

## <u>प्रभु प्यार- ब्राह्मण जीवन का अधार</u>

प्यार के सागर शिवबाबा, प्रभु प्यार की पालना में रहने वाले श्रेष्ठ आत्माओं प्रति बोले

आप सभी स्नेही सहयोगी, सहजयोगी आत्माओं को रहे हैं। योगी आत्मायें तो सभी हैं। ऐसे ही कहेंगे कि यह योगियों की सभा है। सभी योगी तू आत्मायें अर्थात् प्रभु प्रिय आत्मायें बैठी हैं। जो प्रभु को प्रिय लगती हैं वह विश्व की प्रिय बनती ही हैं। सभी को यह रुहानी नशा, रुहानी रुहाब, रुहानी फखर सदा रहता है कि हम पमरत्म प्यारे, भगवान के प्यारे जगत के प्यारे बन गये। सिर्फ एक आधी घड़ी की नज़र वा दृष्टि पड़ जाए, भक्त लोग इसके प्यासे रहते हैं। और इसी को महानता समझते हैं। लेकिन आप ईश्वरीय प्यार के पात्र बन गये। प्रभु प्यारे बन गये। यह कितना महान भाग्य है। आज हर आत्मा बचपन से मृत्यु तक क्या चाहती है? बेस-मझ बच्च भी जीवन में प्यार चाहता है। पैसा पीछे चाहता लेकिन पहले प्यार चाहता। प्यार नहीं तो जीवन निराशा को जीवन अनु-भव करते, बेरस अनुभव करते हैं। लेकिन आप सर्व आत्मओं को परमात्म प्यार मिला, परमात्मा के प्यारे बने। इससे बड़ी वस्तु और कुछ है? प्यार है तो जहान है, जान है। प्यार नहीं तो बेजान, बेजहान हैं। प्यार मिला अर्थात् जहान मिला। ऐसा प्यार श्रेष्ठ भाग्य अनुभव करते हो? दुनिया इसकी प्यासी है। एक बूँद की प्यासी है और आप बच्चों का यह प्रभु प्यार प्रापर्टी है। इसी प्रभु प्यार से पलते हो। अर्थात् ब्राह्मण जीवन में आगे बढ़ते हो। ऐसा अनुभव करते हो? प्यार के सागर में लवलीन रहते हो? वा सिर्फ सुनते वा जानते हो? अर्थात सागर के किनारे पर खड़े-खड़े सिर्फ सोचते और देखते रहते हो। सिर्फ सुनना और जानना यह है किनारे पर खड़ा होना। मानना और समा जाना यह है प्रेम के सागर में लवलीन होना। प्रभु के प्यारे बनकर भी सागर में समा जाना, लीन हो जाना यह अनुभव नहीं किया तो प्रभु प्यार के पात्र बन करके पाने वाले नहीं लेकिन प्यास रह गये। पास आते भी प्यास रह जाना इसको क्या कहेंगे? सोचो किसने अपना बनाया! किसके प्यारे बने! किसकी पालना में पल रहे हैं? तो क्या होगा? सदा स्नेह में समाये हुए होने कारण समस्यायें वा किसी भी प्रकार की हलचल का प्रभाव पड़ नहीं सकता। सदा विघ्न विनाशक समाधान स्वरुप, मायाजीत अनुभव करेंगें।

कई बच्चे कहते हैं– ज्ञान की गुह्य बातें याद नहीं रहतीं। लेकिन एक बात यह याद रहती है कि मैं परमात्मा का प्यारा हूँ। परमात्म-प्यार का अधिकारी हुँ। इसी एक स्मृति से भी सदा समर्थ बन जायेंगे। यह तो सहज है ना। यह भी भूल जाता फिर तो भूल भुलैया में फँस गये। सिर्फ यह एक बात सर्व प्राप्ति के अधिकारी बनाने वाली है। तो सदैव यही याद रखो, अनुभव करो कि मैं प्रभु का प्यारा जग का प्यारा हूँ। समझा! यह तो सहज है ना। अच्छा – सुना तो बहुत है, अब समाना है। समाना ही समान बनना है। समझा! सभी प्रभु प्यार के पात्र बच्चों को, सभी स्नेह में समाए हुए श्रेष्ठ आत्माओं को, सभी प्यार की पालना के अधिकारी बच्चों को, रुहानी फखर में रहने वाली, रुहानी नशे में रहने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमसते।

पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

१. सभी सहज योगी आत्मायें हो ना! सर्व सम्बन्ध से याद सहज योगी बना देती है। जहाँ सम्बन्ध है वहाँ सहज है। मैं सहजयोगी आत्मा हूँ, यह स्मृति सर्व समस्याओं को सहज ही समाप्त करा देती है। क्योंकि सहजयोगी अर्थात् सदा बाप का साथ है। जहाँ सर्व शक्तिवान बाप साथ है, सर्व शक्तियाँ साथ हैं तो समस्या समाधान के रुप में बदल जायेगी। कोई भी समस्या बाप जाने, समस्या जाने। ऐसे सम्बन्ध के अधिकार से समस्या समाप्त हो जायेगी। मैं क्या करूँ! नहीं। बाप जाने समस्या जाने। मैं न्यारा और बाप का प्यारा हूँ। तो सब बोझ बाप का हो जायेगा और आप हल्के जो जायेंगे। जब स्वयं हल्के बन जाते तो सब बातें भी हल्की हो जाती हैं। जरा भी सोच चलता तो भारी हो जाते और बातें भी भारी हो जातीं। इसलिए मैं हल्का हूँ, न्यारा हूँ तो सब बातें भी हल्की हैं। यही विधि हैं इसी विधि से सिद्धि प्रापत होगी। पिछला हिसाब-किताब चुक्तू होते हुए भी बोझ अनुभव नहीं होगा। ऐसे साक्ष्ज़ी होकर देखेंगे तो जैसे पिछला खत्म हो रहा है और वर्तमान की शक्ति से साक्षी हो देख रहे हैं। जमा भी हो रहा है और चुक्तू भी हो रहा है। जमा की शक्ति से चुक्तू का बोझ नहीं। तो सदा वर्तमान को याद रखो। जब एक तरफ भारी होता तो दूसरा स्वत: हल्का हो जाता। तो वर्तमान भारी है तो पिछला हल्का हो जायेगा ना। वर्तमान प्राप्ति का स्वरुप सदा स्मृति में रखो तो सब हल्का हो जायेगा। तो पिछले हिसाब को हल्का करने का साधन है वर्तमान की प्राप्ति को सामने रखेंगे तो सब सहज हो जायेगा। पिछला सूली को काँटा हो जायेगा। क्या है, क्यों है, नहीं। पिछला है। पिछले को क्या देखना। जहाँ लगन है वहाँ विघ्न भारी नहीं लगता। खेल लगता है। वर्तमान की खुशी की दुआ से और दवा से सब हिसाब-किताब चुक्तू करो।

टीचर्स से:- सदा हर कदम में सफलता अनुभव करने वाली हो ना। अनुभवी आत्मायें हो ना! अनुभव ही सबसे बड़ी अथार्टी है। अनुभव की अथार्टी वाले हर कदम में हर कार्य में सफल हैं ही। सेवा के निमित्त बनने का चांस मिलना भी एक विशेषता की निशानी है। जो चांस मिलता है उसी को आगे बढ़ाते रहो। सदा निमित्त बन आगे बढ़ने और बढ़ाने वाली हैं। यह निमित्त भाव ही सफलता को प्राप्त कराता है। निमित्त और निर्माण की विशेषता को सदा साथ रखो। यही विशेषता सदा विशेष बनायेगी। निमित्त् बनने का पार्ट स्वयं को भी लिफ्ट देता है। औरों को निमित्त् बनना अर्थात् स्वयं सम्पन्न बनना। दृढ़ता से सफलता को प्राप्त करते चलो। सफलता ही है, इसी दृढ़ता से सफलता स्व्यं आगे जायेगी।

जन्मते ही सेवाधारी बनने का गोल्डन चांस मिला है तो बड़े ते बड़ी चांसलर बन गई ना। बचपन से ही सेवाधारी की तकदीर लेकर आई हो। तकदीर जगाकर आई हो। कितनी आत्माओं की श्रेष्ठ तकदीर बनाने के कर्तव्य के निमित्त बन गई। तो सदा याद रहे वाह मेरे श्रेष्ठ तकदीर की श्रेष्ठ लकीर। बाप मिला, सेवा मिली, सेवास्थान मिला और सेवा के साथ-साथ सर्व आत्माओं का श्रेष्ठ परिवार मिला। क्या नहीं मिला। राज्य भाग्य सब मिल गया। यह खुशी सदा रहे। विधि द्वारा सदा वृद्धि को पाते रहो। निमित्त भाव की विधि से सेवा में वृद्धि होती रहेगी।

कुमारों से:- कुमार जीवन में बच जाना यह सबसे बड़ा भाग्य है। कितने काँटे झंझटों से बच गये। कुमार अर्थात बन्धमुक्त आत्मायें। कुमार जीवन बन्धनमुक्त जीवन है। लेकिन कुमार जीवन में भी फ्री रहना माना बोझ उठाना। कुमारों के प्रति बापदादा का डायरेक्शन है लौकिक में रहते अलौकिक सेवा करनी है। लौकिक सेवा सम्पर्क बनाने का साधन है। इसमें बिजी रहो तो अलौकिक सेवा कर सकेंगे। लौकिक में रहते अलौकिक सेवा करो। तो बुद्धि भारी नहीं रहेगी। सबको अपना अनुभव सुनाकर सेवा करो। लौकिक सेवा, सेवा का साधन समझकर करो तो लौकिक साधन बहुत सेवा का चांस दिलायेगा। लक्ष्य ईश्वरीय सेवा का है लेकिन यह साधन है। ऐसे समझकर करो। कुमार अर्थात् हिम्मत वाले। जो चाहो वह कर सकते हैं। इसलिए बापदादा सदा साधनों द्वारा सिद्ध को प्राप्त करने की राय देते हैं। कुमार अर्थात् निरन्तर योगी। क्योंकि कुमारों का संसार ही एक बाप है। जब बाप ही संसार है तो संसार के सिवाए बुद्धि और कहाँ जायेगी। जब एक ही हो गया तो एक की ही याद रहेगी ना। और एक को याद करना बहुत सहज है। अनेकों से तो छूट गये। एक में ही सब समाये हुए हैं! सदा हर कर्म से सेवा करनी है, दृष्टि से, मुख से सेवा ही सेवा। जिससे प्यार होता है उसे प्रत्यक्ष करने का उमंग होता है। हर कदम में बाप और सेवा सदा साथ रहे। अच्छा–

12-4-84

## ब्राह्मण जीवन की फाउन्डेशन – पवित्रता

दु:खों से छुड़ाने वाले, धोखों से बचाने वाले, रहमदिल बापदादा बोले:-

आज बापदादा सभी होलीहंसों को देख रहे हैं। हर एक होलीहंस कहाँ तक होली बने हैं, कहाँ तक हंस बने हैं! पवित्रता अर्थात् होली बनने की शक्ति कहाँ तक जीवन में अर्थात् संकल्प, बोल और कर्म में, सम्बन्ध में, सम्पर्क में लाई है। हर संकल्प होली अर्थात् पवित्रता की शक्ति सम्पन्न है? पवित्रता के संकल्प द्वारा किसी भी अपवित्र संकल्प वाली आत्मा को परख और परिवर्तन कर सकते हो? पवित्रता की शक्ति से किसी भी आत्मा की दृष्टि, वृत्ति और कृति तीनों ही बदल सकते हो। इस महान शक्ति के आगे अपवित्र संकल्प भी वार नहीं कर सकते। लेकिन जब स्वयं संकलप, बोल वा कर्म में हार खाते हो तब दूसरे व्यक्त वा वायब्रेशन से हार होती हो। किसी के भी सम्बन्ध वा सम्पर्क से हार खाना यह सिद्ध करता है कि स्वयं बाप से सर्व सम्बन्ध जोड़ने में हार खाये हुए हैं। तब किसी सम्बन्ध वा सम्पर्क से हार खाते हैं। पवित्रता में हार खाना, इसका बीज है किसी भी व्यक्ति वा व्यक्ति के गुण, स्वभाव, व्यक्तित्व वा विशेषता से प्रभावित होना। यह व्यक्ति वा व्यक्त भाव में प्रभावित होना, अप्रभावित होना नहीं लेकिन बरबार होना है। व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषता वा गुण, स्वभाव बाप की दी हुई विशेषता है अर्थात् दाता की देन है। व्यक्ति पर प्रभावित होना यह धोखा खाना है। धोखा खाना अर्थात् दु:ख उठाना। अपवित्रता की शक्ति, मृगतृष्णा समान शक्ति है जो सम्पर्क वा सम्बन्ध से बड़ी अच्छी अनुभव होती है, आकर्षण करती है। समझते हैं कि मैं अच्छाई की तरफ प्रभावित हो रहा हूँ। इसलिए शब्द भी यही बोलते वा सोचते कि यह बहुत अच्छे लगते या अच्छी लगती है वा इसका गुण वा स्वभाव अच्छा लगता है। ज्ञान अच्छा लगता है। योग कराना अच्छा लगता है। इससे शक्ति मिलती है! सहयोग मिलता है, स्नेह मिलता है। अल्पकाल की प्राप्ति होती है लेकिन धोखा खाते हैं। देने वाले दाता अर्थात् बीज को, फाउन्डेशन को खत्म कर दिया और रंग-बिरंगी डाली को पकड़कर झूल रहे हैं तो क्या होल होगा? सिवाए फाउन्डेशन के डाली झुलायेगी या गिरायेगी? जब तक बीज अर्थात् दाता, विधाता से सर्व सम्बन्ध सर्व प्राप्ति के रस का अनुभ्ज्ञव नहीं तब तक कब व्यक्ति से, कब वैभव से कब वायब्रेशन वायुमण्डल आदि भिन्न-भिन्न डालियों से अल्पकाल की प्राप्ति का मृगतृष्णा समान धोखा खाते रहेंगे। यह प्रभावित होना अर्थात् अविनाशी प्राप्ति से वंचित होना। पवित्रता की शक्ति जब चाहो जिस स्थिति को चाहे, जिस प्राप्ति को चाहो जिस कार्य में सफलता चाहो, वह सब आपके आगे दासी के समान हाजिर हो जायेगी। जब कलियुग के अन्त में भी रजोप्रधान पवित्रता की शक्ति धारण करने वाले नामधारी महात्माओं की अब अन्त तक भी प्रकृति दासी होने का प्रमाण देख रहे हो। अब तक भी नाम महात्मा चल रहा है, अब तक भी पूज्य हैं। अपवित्र आत्मायें झुकती हैं। तो सोचो – अन्त तक भी पवित्रता के शक्ति की कितनी महानता है। और परमात्मा द्वारा प्राप्त हुई सतोप्रधान पवित्रता कतनी शक्तिशाली होगी। इस श्रेष्ठ पवित्रता की शक्ति के आगे अपवित्रता झुकी हुई नहीं लेकिन आपके पांव के नीचे हैं। अपवित्रता रुपी आसुरी शक्ति, शक्ति स्वरुप के पांव के नीचे दिखाई हुई है। जो पांव के नीचे हारी हुई है, हार कैसे खिला सकती है।

ब्राह्मण जीवन और हार खाना इसको कहेंगे नामधारी ब्राह्मण। इसमें अलबेले मत बनो। ब्राह्मण जीवन को फाउन्डेशन है पवित्रता की शक्ति। अगर फाउन्डेशन कमजोर है तो प्राप्तियों की २१ मंजिल वाली बिल्डिंग कैसे टिक सकेगी। यदि फाउन्डेशन हिल रहा है तो प्राप्ति का अनुभव सदा नहीं रह सकता अर्थात् अचल नहीं रह सकते। और वर्तमान युग को वा जन्म की महान प्राप्ति का अनुभव भी नहीं कर सकते। युग की, श्रेष्ठ जन्म की महिमा गाने वाली ज्ञानी भक्त बन जायेंगे। अर्थात् समझ है लेकिन स्वयं नहीं हैं, इसको कहते हैं ज्ञानी भक्त। अगर ब्राह्मण बनकर सर्व प्राप्तियों का, सर्व शक्तियों का वरदान या वर्सा अनुभव नहीं किया तो उसको क्या कहेंगे? वंचित आत्मा वा ब्राह्मण आत्मा? इस पवित्रता के भिन्न-भिन्न रुपों को अच्छी तरह से जानों, स्व्यं के प्रति कड़ी दृष्टि रखो। चलाओ नहीं। निमित्त् बनी हुई आत्माओं को, बाप को भी चलाने की कोशिश करते हैं। यह तो होता ही है, ऐसा कौन बना है! वा कहते हैं यह अपवित्रता नहीं है, महानता है, यह तो सेवा का साधन है। प्रभावित नहीं हैं, सहयोग लेते हैं। मददगार है इसीलिए प्रभावित हैं। बाप भूला और लगा माया का गोला। या फिर अपने को छुड़ाने के लिए कहते हैं – मैं नहीं करती, यह करते हैं। लेकिन बाप को भूले तो धर्मराज के रुप में ही बाप मिलेगा। बाप का सुख कभी पा नहीं सकेंगे। इसलिए छिपाओ नहीं, चलाओ नहीं। दूसरे को दोषी नहीं बनाओ। मृगतृष्णा के आकर्षण में धोखा नहीं खाओ। इस पवित्रता के फाउन्डेशन में बापदादा धर्मराज द्वारा १०० गुणा, पदमगुण दण्ड दिलाता है। इसमें रियायत कभी नहीं हो सकती। इसमें रहमदिल नहीं बन सकते। क्योंकि बाप से नाता तोड़ा तब तो किसी के ऊपर प्रभावित हुए। परमात्म प्रभाव से निकल आत्माओं के प्रभाव में आना अर्थात बाप को जाना नहीं, पहचाना नहीं। ऐसे के आगे बाप, बाप के रुप में नहीं धर्मराज के रुप में है। जहाँ पाप है वहाँ बाप नहीं। तो अलवेले नहीं बनो। इसको छोटी सी बात नहीं समझो। वह भी किसी के प्रति प्रभावित होना, कामना अर्थात् काम विकार का अंश है। बिना कामना के प्रभावित नहीं हो सकते। वह कामना भी काम विकार है। महाशत्रु है। यह दो रुप में आता है। कामना या तो प्रभावित करेगी या परेशान करेगी। इसलिए जैसे नारे लगाते हो – काम विकार नर्क का द्वार। ऐसे अब अपने जीवन के प्रति यह धारणा बनाओ कि किसी भी

प्रकार की अल्पकाल की कामना मृगतृष्णा के समान धोखेबाज है। कामना अर्थात् धोखा खाना। ऐसी कड़ी दृष्टि वाले इस काम अर्थात् कामना पर काली रुप बनो। स्नेही रुप नहीं बनो, बिचारा है, अच्छा है, थोड़ा-थोड़ा है ठीक हो जायेगा। नहीं! विकर्म के ऊपर विकराल रुप धारण करो। दूसरों के प्रति नहीं अपने प्रति। तब विकर्म विनाश कर फरिश्ता बन सकेंगे। योग नहीं लगता तो चेक करो – जरुर कोई छिपा हुआ विकर्म अपने तरफ खींचता है। ब्राह्मण आत्मा और योग नहीं लगे, यह हो नहीं सकता। ब्राह्मण माना ही एक के हैं, एक ही हैं। तो कहाँ जायेंगे? कुछ है ही नहीं तो कहाँ जायेंगे? अच्छा–

सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन और भी काम विकार के बाल बच्चे हैं। बापदादा को एक बात पर बहुत आश्चर्य लगता है। ब्राह्मण कहता है, ब्राह्मण आत्मा पर व्यर्थ का विकारी दृष्टि, वृत्ति जाती है। यह कुल कलंकित की बात है। कहना बहन जी, वा भाई जी और करना क्या है! लौकिक बहन पर भी अगर कोई बुरी दृष्टि जाए, संकल्प भी आये, तो उसे कुल कलंकित कहा जाता है। तो यहाँ क्या कहेंगे? एक जन्म के नहीं लेकिन जन्म-जन्म का कलंक लगाने वाले। राज्य भाग्य को लात मारने वाले। ऐसे पदमगुणा विकर्म कभी नहीं करना। यह विकर्म नहीं महा विकर्म है। इसलिए सोचे, समझो, सम्भालो। यही पाप जमदूतों की तरह चिपक जायेंगे। अभी भले समझते हैं बहुत बजे में रह रहे हैं, कौन देखता है, कौन जानता है लेकिन पाप पर पाप चढ़ता जाता है और यही पाप खाने को आयेंगे। बापदादा जानते हैं कि इसकी रिजल्ट कितनी कड़ी है। जैसे शरीर से कोई तड़प-तड़प कर शरीर छोड़ता वैसे बुद्धि पापों में तड़प-तड़पकर शरीर छोड़ेगी। सदा सामने यह पाप के जमदूत रहते हैं। इतना कड़ा अन्त है। इसलिए वर्तमान में गलती से भी ऐसा पाप नहीं करना। बापदादा सिर्फ सम्मुख बैठे हुए बच्चों को नहीं कर रहे हैं लेकिन चारों ओर के बच्चों को समर्थ बना रहे हैं। खबरदार, होशियार बना रहे हैं। समझा - अभी तक इस बात में कमजोरी काफी है। अच्छा=

सभी स्वयं प्रति इशारे से समझने वाले, सदा अपने विकल्प और विकर्म पर काली रुप धारण करने वाली, सदा भिन्न-भिन्न धोखों से बचने वाले, दु:खों से बचने वाले, शक्तिशाली आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

15-4-84

## स्नेही, सहयोगी, शक्तिशाली – बच्चों की तीन अवस्थाएं

अव्यक्त बापदादा, अपने स्नेही, सहयोगी शक्तिशाली बच्चों के प्रति बोले:-

बापदादा सभी स्नेही, सहयोगी और शक्तिशाली बच्चों को देख रहे हैं। स्नेही बच्चों में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के स्नेह वाले हैं। एक हैं – दूसरों की श्रेष्ठ जीवन को देख दूसरों का परिवर्तन देख उससे प्रभावित हो स्नेही बनना। दूसरें हैं – किसी न किसी गुण की, चाहे सुख वा शान्ति की थोड़ी-सी अनुभव की झलक देख स्नेही बनना। तीसरें हैं संग अर्थात् संगठन का, शुद्ध आत्माओं का सहारा अनुभव करने वाली स्नेही आत्मायें। चौथे हैं – परमात्म स्नेही आत्मायें। स्नेही सब हैं लेकिन स्नेह में भी नम्बर हैं। अर्थात् स्नेही अर्थात् बाप को यथार्थ रीति से जान स्नेही बनना।

ऐसे ही सहयोगी आत्माओं में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के सहयोगी हैं। एक हैं – भक्ति के संस्कार प्रमाण सहयोगी। अच्छी बातें हैं, अच्छा स्थान है, अच्छी जीवन वाले हैं, अच्छे स्थान पर करने से अच्छा फल मिलता है, इसी आधार पर, इसी आकर्षण से सहयोगी बनना अर्थात् अपना थोड़ा-बहुत तन-मन-धन लगाना। दूसरे हैं – ज्ञान वा योग की धारणा के द्वारा कुछ प्राप्ति करने के आधार पर सहयोगी बनना। तीसरे हैं – एक बाप दूसरा न कोई। एक ही बाप है, एक ही सर्व प्राप्ति का स्थान है। बाप का कार्य सो मेरा कार्य है। ऐसे अपना बाप, अपना घर, अपना कार्य, श्रेष्ठ ईश्वरीय कार्य समझ सहयोगी सदा के लिए बनना। तो अन्तर हो गया ना!

ऐसे ही शक्तिशाली आत्मायें, इसमें भी भिन्न-भिन्न स्टेज वाले हैं – सिर्फ ज्ञान के आधार पर जानने वाले कि मैं आत्मा शक्ति स्वरुप हूँ, सर्वशक्तिमान बाप का बच्चा हूँ – यह जानकर प्रयत्न करते हैं शक्तिशाली स्थिति में स्थित होने का। लेकिन सिर्फ जानने तक होने कारण जब यह ज्ञान की पाइंट स्मृति में आती है, उस समय शक्तिशाली पांइट के कारण वह थोड़ा-सा समय शक्तिशाली बनते फिर पाइंट भूली, शक्ति गई। जरा भी माया का प्रभाव, ज्ञान भुलाए निर्बल बना देता है। दूसरे हैं – ज्ञान का चिन्तन भी करते, वर्णन भी करते दूसरों को शक्तिशाली बातें सुनाते, उस समय सेवा का फल मिलने के कारण अपने को उतना समय शक्तिशाली अनुभव करते हैं लेकिन चिन्तन के समय तक वा वर्णन के समय तक, सदा नहीं। पहली चिन्तन की स्थिति दूसरी वर्णन की स्थिति। तीसरे हैं – सदाशक्तिशाली आत्मायें। सिर्फ चिन्तन और वर्णन नहीं करते लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान स्वरुप बन जाते। स्वरुप बनना अर्थात् समर्थ बनना। उनके हर कदम, हर कर्म स्वत: ही शक्तिशाली होते हैं। स्मृति स्वरुप हैं इसलिए सदा शक्तिशाली स्थिति है। शक्तिशाली आत्मा सदा अपने को सर्वशक्तिमान बाप के साथ, कम्बाइन्ड अनुभव करेगी। और सदा श्रीमत का हाथ छत्रछाया के रुप में अनुभव होगा। शक्तिशाली आत्म, सदा दृढ़ता की चाबी के अधिकारी होने कारण सफलता के खजाने के मालिक अनुभव करते हैं। सदा सर्व प्राप्तियों के झूलों में झूलते रहते हैं। सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य के मन में गीत गाते रहते हैं। सदा रुहानी नशे में होने कारण पुरानी दुनिया के आकर्षण से सहज परे रहते हैं। मेहनत नहीं करनी पड़ती है। शक्तिशाली आत्मा का हर

कर्म, बोल स्वत: और सहज सेवा कराता रहता है। स्व परिवर्तन वा विश्व परिवर्तन शक्तिशाली होने के कारण सफलता हुई पड़ी है, यह अनुभव सदा ही रहता है। किसी भी कार्य में क्या करें, क्या होगा यह संकल्प मात्र भी नहीं होगा। सफलता की माला। सदा जीवन में पड़ी हुई है। विजयी हूँ, विजय माला का हूँ। विजय जन्म सिद्ध अधिकार है, यह अटल निश्चय स्वत: और सदा रहता ही है। समझा। अब अपने आप से पूछो मैं कौन? शक्तिशाली आत्मायें मिनारटी हैं। स्नेही, सहयोगी उसमें भी भिन्न-भिन्न वैराइटी वाले मैजारिटी हैं। तो अब क्या करेंगे? शक्तिशाली बनो। संगमयुग का श्रेष्ठ सुख अनुभव करो। समझा! सिर्फ जानने वाले नहीं, पाने वाले बनो। अच्छा-

अपने घरे में आये वा बाप के घर में आये। पहुँच गये, यह देख बापदादा खुश होते हैं। आप भी बहुत खुश हो रहे हैं ना। यह खुशी सदा कायम रहे। सिर्फ मधुबन तक नहीं – संगमयुग ही साथ रहे। बच्चों की खुशी में बाप भी खुश है। कहाँ-कहाँ से चलकर, सहन कर पहुँच तो गये ना। गर्मी-सर्दी, खान-पान सबको सहनकर पहुँचे हो। धूल मिट्टी की वर्षा भी हुई। यह सब पुरानी दुनिया में तो होता ही है। फिर भी आराम मिल गया ना। आराम किया? तीन फुट नहीं तो दो फुट जगह तो मिली। फिर भी अपना घर दाता का घर मीठा लगता है ना। भक्ति मार्ग की यात्राओं से तो अच्छा स्थान है। छत्रछाया के अन्दर आ गये। प्यार की पालना में आ गये। यज्ञ की श्रेष्ठ धरनी पर पहुँचना, यज्ञ के प्रसाद का अधिकारी बनना, कितना महत्व है। एक कणा, अनेक मूल्यों के समान है। यह तो सब जानते हो ना! वह तो प्रसाद का एक कणा मिलने के प्यासे हैं और आपको तो ब्रह्मा भोजन पेट भरकर मिलेगा। तो कितने भाग्यवान हो। इस महत्व से ब्रह्मा भोजन खाना तो सदा के लिए मन भी महान बन जायेगा। अच्छा– सबसे ज्यादा पंजाब आया है। इस बारी ज्यादा क्यों भागे हो? इतनी संख्या कभी नहीं आई है। होश में आ गये! फिर भी बापदादा ये ही श्रेष्ठ विशेषता देखते – पंजाब में सतसंग और अमृतवेले का महत्व है। नंगे पाव भी अमृतवेले पहुँच जाते हैं। बापदादा भी पंजाब निवासी बच्चें को इसी महत्व को जानने वालों की महानता से देखते हैं। पंजाब निवासी अर्थात् सदा संग के रुहानी रंग में रंगे हुए। सदा सत के संग में रहने वाले। ऐसे हो ना? पंजाब वाले सभी अमृतवेले समर्थ हो मिलन मनाते हो? पंजाब वालों में अमृतवेले का आलस्य तो नहीं है ना? झुटके तो नहीं खाते हो? तो पंजाब की विशेषता सदा याद रखना। अच्छा–

ईस्टर्न जोन भी आया है, ईस्ट की विशेषता क्या होती है? (सनराइज) सूर्य सदा उदय होता है। सूर्य अर्थात् रोशनी का पुंज। तो सभी ईस्टर्न जोन वाले मास्टर ज्ञान सूर्य हैं। सदा अंधकार को मिटाने वाले, रोशनी देने वाले हैं ना! यह विशेषता है ना। कभी माया के अंधकार में नहीं आने वाले। अंधकार मिटाने वाले मास्टर दाता हो गये ना! सूर्य दाता है ना। तो सभी मास्टर सूर्य अर्थात् मास्टर दाता बन विश्व को रोशनी देनले के कार्य में बिजी रहते हो ना। जो स्वयं बिजी रहते हैं, फुर्सत में नहीं रते, माया को भी उन्हों के लिए फुर्सत नहीं होती। तो ईस्टर्न जोन वाले क्या समझते हो? ईस्टर्न जोन में माया आती है? आती भी है तो नमस्कार करने आती या मिक्की माउस बना देती है? क्या मिक्की माउस का खेल अच्छा लगता है? ईस्टर्न जोन की गद्दी है बाप की गद्दी। तो राजगद्दी हो गई ना। राजगद्दी वाले राजे होंगे या मिक्की माउस होंगे? तो सभी मास्टर ज्ञान सूय हो? ज्ञान सूर्य उदय भी वहीं से हुआ है ना। इस्ट से ही उदय हुआ। समझा अपनी विशेषता। प्रवेशता की श्रेष्ठ गद्दी के अर्थात् वरदानी स्थान की श्रेष्ठ आत्मायें हो। यह विशेषता किसी और जोन में नहीं है। तो सदा अपने विशेषता को विश्व की सेवा में लगाओ। क्या विशेषता करेंगे? सदा मास्टर ज्ञान सूर्य। सदा रोशनी देने वाले मास्टर दाता। अच्छा – सभी मिलने आये हैं, सदा श्रेष्ठ मिलन मनाते रहना। मेला अर्थात् मिलना। एक सेकण्ड भी मिलन मेले से वंचित नहीं होना। निरन्तर योगी का अनुभव पक्का करके जाना। अच्छा–

सदा एक बाप के स्नेह में रहने वाले, स्नेही आत्मओं को हर कदम ईश्वरीय कार्य के सहयोगी आत्माओं को, सदा शक्तिशाली स्वरुप श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा विजय के अधिकार को अनुभव करने वाले, विजयी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से:- एक बल और एक भरोसे से सदा उन्न्ति को पाते रहो। सदा एक बाप के हैं एक बाप की श्रीमत पर चलना है। इसी पुरुषार्थ से आगे बढते चलो। अनुभव करो श्रेष्ठ ज्ञान स्वरुप बनने का। महान योगी बनने का। गहराई में जाओ। जितना ज्ञान की गहराई में जायेंगे उतना अमूल्य अनुभव के रत्न प्राप्त करेंगे। एकाग्र बुद्धि बनो। जहाँ एकाग्रता है वहाँ सर्व प्राप्तियों का अनुभव है। अप्पकाल की प्राप्ति के पीछे नहीं जाओ। अविनाशी प्राप्ति करो। विनाशी बातों में आकर्षित नहीं हो। सदा अपने को अविनाशी खजाने के मालिक समझ बेहद में आओ। हद में नहीं आओ। बेहद का मजा और हद के आकर्षण का मजा इसमें रात-दिन का फर्क है। इसलिए समझदार बन समझ से काम लो। और वर्तमान तथा भविष्य श्रेष्ठ बनाओ।